

अमृतवाणी

अर्ध वार्षिक पत्रिका
तीसरा अंक
अक्टूबर 2024-मार्च 2025

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल
तिरुवनंतपुरम व शाखा, तृशूर



अमृतवाणी

अर्ध वार्षिक पत्रिका

तीसरा अंक

अक्टूबर 2024-मार्च 2025

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
केरल

तिरुवनंतपुरम व शाखा, तृशूर

प्रकाशन: अमृतवाणी- हिंदी ई- गृह पत्रिका

प्रकाशक: महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल,
तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, तृशूर

अंक: तीसरा अंक

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

संरक्षक

श्री विष्णुकांत पी बी
महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ. अनीष डी
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

संपादक मण्डल

संपादक

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सदस्य

श्री कण्णन एस एस
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार के के
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री वी एस जयचंद्रन
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री योगेन्द्र सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती नीनू एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती राधिका टी.वी
वरिष्ठ अनुवादक



विष्णुकांत पी बी, भा.लेप. और ले.से.
महालेखाकार



यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारी कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के नवीनतम संस्करण का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा के तौर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में यह विभागीय पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही, पत्रिका का अविरत प्रकाशन हमारे सहकर्मियों को अपनी सृजनात्मकता को तलाशने की प्रेरणा देता है और उनके विचारों को साझा करने का मंच प्रदान करता है।

मैं संपादक मण्डल एवं रचनाकारों का, उनके सहयोग एवं समर्पण के लिए हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। आप सभी के निरंतर सहयोग की उम्मीद करता हूँ जिससे यह सुनिश्चित हो जाए कि भविष्य में भी यह पत्रिका अधिक आकर्षक और समृद्ध बनी रहेगी।

शुभकामनाएं।

संरक्षक
'अमृतवाणी'



डॉ अनीश डी, भा.लेप. और ले.से.
वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन एवं एएमजी I

अत्यंत हर्ष के साथ संविधान की हीरक जयंती महोत्सव के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को समर्पित अपनी कार्यालयीन पत्रिका 'अमृतवाणी' का तीसरा संस्करण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

दुनिया भर में अनगिनत भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं उनमें से हिंदी सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक बनकर उभर आयी है, जिसे हमारी युवा पीढ़ी ने उत्साहपूर्वक अपनाया है। भारत सरकार के प्रत्येक कार्यालय में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती हैं जिनके जरिए पदाधिकारीगण हिंदी में सोचने और अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए सक्षम बनते हैं। इसी भावना से, हमारे कार्यालयीन कर्मचारियों को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए 'अमृतवाणी' का शुभारंभ किया गया था।

इस अंक में हमने एक सफल कार्यालयीन पत्रिका के लिए अपेक्षित सभी मुख्य घटकों को शामिल करने का प्रयास किया है। आकर्षक तथा रोचक विषयों से लेकर ज्ञान संवर्धक विषय-वस्तु तक, इसे एक संपूर्ण संकलन बनाने का प्रयत्न हमने किया है। हमें विश्वास है कि अपने विगत अंकों की ही तरह 'अमृतवाणी' का नया अंक पाठकवृन्द का ध्यान आकर्षित करेगा और उनकी प्रशंसा का पात्र बनेगा। आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रिया आनेवाले अंकों को और बेहतर बनाने के लिए सहायक होगी।

मैं संपादक मण्डल और रचनाकारों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके समर्पण और कड़ी मेहनत से इस पत्रिका का प्रकाशन सुनिश्चित हुआ है।

मुख्य संपादक
'अमृतवाणी'

इस अंक में

साहित्यिक

सरल जीवन ही सफल है

श्रीमती उषा बर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.08

तन्हाई

श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.09

किताबों की दुनिया

सुश्री ए एन देविका

पृ.सं.10

पहले कहीं मिल चुके हैं

श्री राकेश गोदारा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.11

झील आँखें

श्री राकेश गोदारा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.11

स्वासिका..तुम्हारी यादों में

श्रीमती बिन्दु के एन, सहायक पर्यवेक्षक

पृ.सं.12

बेस्ट फ्रेंड

श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.15

एक अनोखा रुवाब

श्रीमती उषा बर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पृ.सं.18

केरल – एक अनोखा अनुभव

सुश्री पेबा पी एच, उप महालेखाकार

पृ.सं.20

गोवा तक हमारे सपनों का सफर

श्री अतुल कृष्ण डी

पृ.सं.22

साहित्यिक

मार्कस ऑरेलियस के “द मेडिटेशन”

पृ.सं.25

श्री वी. बिजु श्रीधर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक : पृ.सं.27

लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ

श्री गोपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वयं में खुश

पृ.सं.30

सुश्री मैथिली जे आर

प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य

पृ.सं.32

श्रीमती सुशीला पी वी, व.लेखापरीक्षा अधिकारी [से.नि.]

कार्य जीवन संतुलन

पृ.सं.35

सुश्री मालविका जे आर

कार्यालयीन

गणतंत्र दिवस

पृ.सं.37

ऑडिट दिवस, 2024

पृ.सं.41

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

पृ.सं.47

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024

पृ.सं.49

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

सरल जीवन ही सफल है

जिंदगी एक बहती नदी है,
जिसका प्रवाह तेज होता है
भागदौड़ में फँसकर गुम न होना
अपने कदम ही थोड़े धीरे बढ़ाओ ।

अपने लिए चंद लम्हे निकालो
खुलकर साँस लेने के मौके ढूँढो
मंजिल पाना जरूरी है लेकिन
रास्ते के नजारों का भी लुत्फ उठाओ ।



श्रीमती उषा बर्ती
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

बीते हुए पल कभी वापस न आए
चाहे कितनी भी कोशिश तुम करो
बेफिजूल बातों पर वक्त बर्बाद न करो
समय की कीमत जान लो ।

जीत की चाहत अच्छी है
जीत के लिए हारने से मत डरो
हार जाने से जो सबक मिलते हैं
खुद को सुधारने में इस्तेमाल करो ।

जीवन एक अनमोल देन है
सदा खुश रहो आभारी रहो
दिल दुखाना बुरी बात है
मुस्कुराके रोशनी फैलाओ ।



तन्हाई

गुमसुम चुप चुप रहता हूँ मैं,
सहमा सहमा सा कहता हूँ मैं,
मेरे प्रियतम, मेरे हमदम
जब तेरी याद न आई
एक पल भी नहीं गुजरा ऐसा,
न जाने अब कैसे कटेगी
तेरे बिन यह तन्हाई ।
जैसे निर्मल बहती सरिता का हो जल
वैसे साथ रहती थी तुम हर पल,
बनकर मेरी परछाई,
नादान था समझ सका ना मैं बुद्धु
अपने रिश्ते की अनुपम गहराई,
तू ही बता अन प्रियतमा मेरी,
कैसे कटेगी तेरे बिन यह तन्हाई ?!

तुम्हारी मीठी यादों में डूबा रहता हूँ हर पल
शिथिल हो गया हूँ, न मुझमें है कोई हलचल,
लगती न है अब भूख मुझे और
न ही प्यास की सुध आई ।
साया हूँ हम एक दूजे का,
पृथक न हुआ करो ऐ हरजाई ।
न जाने अब कैसे कटेगी तेरे बिन
यह तन्हाई ।

निष्ठुर न बन मेरी प्यारी प्रियतम,
मेरे जीवन का तुम हो दर्पण,
बाबुल का घर अब बहुत हुआ,
क्या तुमको मेरी तनिक भी याद न आई ।
कैसे बताऊँ, अब तेरे बिन, नहीं कटती
यह तन्हाई ।

वादा करता हूँ हर बात मैं मानूँगा,
कभी कोई रार नहीं ठानूँगा,
न ही करूँगा कोई प्रीत पराई,



श्री अनुराग शुक्ला
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

जल्दी से लौटो प्रियतम, नहीं कटती
यह तन्हाई ।

कोमल है तू, बड़ी ही चंचल है
तेरे संग जीवन पवित्र, गंगाजल है ।
वादा करता हूँ ऐ प्रेयसी मेरी,
चुटकी में मैं लाकर दूंगा
चाय सुबह की हो या तेरे
मन की रसमलाई,
जल्दी से तू आज्ञा हम दम
नहीं कटती यह तन्हाई ।
नाना प्रकार की ख्वाइशें तेरी,
पलक झपकते ही पूरी कर दूंगा,
तेरी हर इक बात में हाँ बोलूंगा
न करने से तौबा कर लूंगा
बस लौट भी आओ,
अब न सताओं दूर करो यह तन्हाई ।

हृदय से करता हूँ तेरी अराधना प्रियतम
हर पल तुझको ढूँडे यह तन मन,
विरह में तेरे बहते हैं अश्रु अशु सन सन,
निर्मम न बन ऐ प्रेयसी मेरी,
अब तो पिघल जा करता हूँ मैं वंदन,
सुन ले अपने साजन की विनती,
जल्दी से अब तू वापस आ जा
दूर कर यह तन्हाई ॥

किताबों की दुनिया

सफ़े पलटते, जादू बुनते हैं,
हर शब्द में एक नया जहाँ मिलता है।
हकीकत से दूर, ख्वाब चुनते हैं,
दुनिया का शोर कहीं गुम होता है।

पन्नों पर बसा है अजनबी नगर,
जहाँ दुख और सुख के किस्से चलते हैं।
हर किरदार जैसे बनता हमसफ़र,
वो अपनी कहानियाँ हमसे कहते हैं।



सुश्री ए एन देविका
सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोद्दी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वास्तविकता से एक पल की रिहाई,
जब दिल किताबों में खो जाता है।
ये दुनिया कितनी भी हो पराई,
पढ़ते-पढ़ते सब कुछ अपना सा लगता है।

सफर ये पन्नों का अनोखा सा है,
हर मोड़ पर मिलता नया अफसाना।
जितना पढ़ो, उतना गहरा लगता है,
हर कथा में छुपा एक खजाना।

ख्वाबों की गलियों में चलते रहे,
जहाँ सच्चाई भी कुछ धुंधली लगती।
इन कहानियों के रंग पलटते रहे,
हर अधूरी दास्तां मुकम्मल सी लगती।

पहले कहीं मिल चुके हैं

आँखों को मूँद लिया है, लबों को सिल चुके हैं
मुझे तो नहीं लगता, हम पहले कहीं मिल चुके हैं
पहले जैसी मधुर नहीं लगती अब तो कोई भी धुन
लय को जमीन खा गई, सुरों को आसमां निगल चुके हैं
किसे सुनाये दास्तान, कौन ऐतबार करे हमारा
हमारी तरफ के सारे किरदार कहानी से निकल चुके हैं
बिना सितारों के ये समान किसी तन्हा सफर सा लगता है
जो नींद थी उजड़ चुकी है जो ख्वाब थे पिघल चुके हैं
अब वो मुस्कुरा रहे हैं तो हम बोल नहीं पा रहे
वैसे टकटकी के खेल में उनके नैना हिल चुके हैं।



श्री राकेश गोदरा
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

झील आँखें

सिमट आती है हया आँखों में और लहजे बा-कमाल होते हैं
पहली मुलाकात के भी ना जाने कितने अलग सवाल होते हैं।

पहले आँखे झील होती है, फिर जुल्फों के जाल होते हैं
कैसे कहें क्या बात होती है, कितने बुरे हाल होते हैं।

कभी उन गहराइयों को पार कर पाते तो बताते तुम्हे
हम यहीं से क्या बतायें, आँखों के नीचे गाल होते हैं।

आज में अलग क्या है, वही धरती, वही फलक, वही चाँद
ज्यादा समझदार होते हैं वो लोग जिनके ये ख्याल होते हैं।



स्वासिका..तुम्हारी यादों में



श्रीमती बिंदु के एन
सहायक पर्यवेक्षक



एक लम्बी यात्रा के बाद मैं वाराणसी पहुंचा, चेक-इन किया, साफ-सफाई की और गंगा नदी के तट की ओर निकला। मैं उन्हीं सीढ़ियों पर बैठ गया जहाँ स्वासिका और मैं बैठे थे जब हम पहले वहाँ आए थे। मैं पुरानी यादों में खोकर न जाने कितनी देर वहीं बैठा रहा। लंबे समय तक विचार करने के बाद गंगा के किनारे एक बार फिर निर्णय लिया था। भले ही मैं उसकी इच्छा पूरी नहीं कर पाया, यह यात्रा मेरी अंतरात्मा के लिए आवश्यक थी। इस शांत बहती पवित्र नदी के किनारे बैठने की इच्छा से मैं यहाँ आया हूँ। गंगा आरती की तैयारियाँ शुरू हो गई और हर कहीं जय गंगा का उद्घोष गूँजने लगा। आरती के लिए दीपों की कतार लग गयी, मंत्रोच्चारण, भजन- कीर्तन से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। मेरा मन फिर यादों में खो गया.....

बरसों पहले मैं और स्वासिका इसी किनारे आकर कंधे से कंधा मिलाकर अपना प्यार साझा किया था। केदार घाट ! शिवजी के मंदिर से नीचे जाती सीढ़ियाँ उतरकर हम नीचे गए थे। वहाँ मुख्य रूप से दो घाट हैं जहाँ अंतिम संस्कार किया जाता है....एक हरिश्चंद्र घाट और दूसरा मणिकर्णिका घाट। तब इस नदी के किनारे अनाथों की तरह लाशें तैरती नजर आती थीं। कुछ लोग इस नदी के तट पर अपने प्रियजनों के लिए चिता बनाते हैं और खुश होकर घर लौटते हैं कि उनकी आत्मा को शांति मिली है। गंगा नदी ऐसे कितने

कर्मों का गूंगा गवाह बनकर बहती रहती है। स्वासिका मेरे कंधे पर सर रखकर बैठ गई और अचानक उसने पूछा कि मैं मर जाऊंगी तो क्या मेरा अंतिम संस्कार इस नदी के किनारे करवाएंगे ? मैंने हंसते हुए पूछा क्यों। जब मैं इस किनारे विश्राम कर रही हूंगी आप यहां कभी आएंगे तो आपके कंधे पर ऐसे ही सर रखकर बैठूंगी। इस नदी के किनारे कितनी लाशें तैर रही हैं..... मुझे भरोसा हो जाएगा कि मैं इस वाराणसी में अकेली नहीं हूँ। उसकी शरारत भरी बातें सुनकर मैं ज़ोर से हंस पड़ा। फिर मैंने उससे सवाल किया अगर मैं पहले मर जाऊं, तो मुझे लगता है कि तुम मुझे यहीं जला दोगी। अचानक उसने मेरा मुँह बंद कर दिया और कहा कि नहीं, मैं वह सह नहीं पाऊंगी। मेरे सीने में अपना चेहरा छिपाकर सिसकने लगी। उसके बालों में मोगरे की खुशबू सूँघते हुए मैंने धीरे से उसकी घनी लटों में अपनी उँगलियाँ फिराईं। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह मेरे सीने से सिमटकर बैठी हो, उसका कोमल स्पर्श भी मुझे महसूस हो रहा था। स्वासिका.....ये जुदाई मैं बरदाश्त नहीं कर पा रहा हूँ !!

न जाने कितनी देर तक वहीं यादों में डूबकर बैठा रहा। गंगा तट लगभग सुनसान हो गया था। सूर्यास्त होने वाला था, पश्चिमी क्षितिज पर सूर्य की लाल किरणें चमकने लगीं। सभी लोग अपने - अपने घोंसलों की ओर वापस जाने लगे। कुछ देर वहीं बैठने के बाद धीरे-धीरे उठा और वापस अपने कमरे की ओर निकला। जब मैं कमरे के दरवाजे पर पहुँचा तो हैरान रह गया.... क्या..? वही कमरा ... वही नम्बर....ऐसे कैसे हो सकता है ? यह वही कमरा है जहाँ हम पिछली बार रहे थे... ! सुबह जब कमरा मिला मेरे ध्यान में नहीं आया था कि हम इसी कमरे में रहे थे। अचानक पुरानी यादें उमड़ पड़ीं यह वही कमरा जहाँ हमने अपना प्यार, अपने सपने साझा किए थे। दरवाज़ा खोलकर अंदर कदम रखा वही मोगरे की खुशबू

! क्या स्वासिका यहीं है.....? मैंने अपने मन को संभाला। मैं बिस्तर पर लेट गया लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। यादें चारों ओर घिरी हुई थीं गंगा के किनारे के दृश्य भी मुझे अंदर से खाए जा रहे थे। चाहे कितना भी अमीर क्यों न हो पैसा कमाने की लुत्फ कभी आदमी नहीं छोड़ता..... वह लत उस पर हावी हो जाती है। लेकिन सब एक मिनट में खत्म हो जाता है। मरते समय उसकी कमाई, शान शौकत कुछ भी काम नहीं आता। विनोद ! मैं चौंक गया, मुझे स्वासिका की आवाज साफ सुनायी दी। स्वासिका की यादें मुझे बहुत कमज़ोर कर रही हैं, मुझे यहां आना ही नहीं चाहिए था। पता नहीं रात के किस पहर पर मुझे नींद आयी...अचानक स्वासिका की नरम हथेलियों का स्पर्श मुझे महसूस हुआ.....उसकी सांसों की गरमी मुझे महसूस हो रही थी। क्या वह मेरे पास आयी थी जैसा उसने कहा था? हे भगवान, क्या मेरी स्वासिका जिंदा है ? क्या वह मुझसे मिलने आयी थी जैसा उसने कहा था.. या यह सिर्फ मेरी कल्पनाएं हैं...?



सुबह - सुबह मैं रामघाट पहुँचासभी पूजाएँ कीं। मैं उस लड़की की अंत्येष्टि कर रहा हूँ जो अब तक मेरे तन-मन का एक हिस्सा था... मेरी आंखें भरती आ रही थी। पूरा कर्म संपन्न होने के बाद मैं वहां से वापस

निकला। मेरी आंखें कांच की चूड़ियों पर पड़ी। कांच की चूड़ियां उसको बहुत पसंद थी। वापस कमरे पहुंचा तो मुझे बहुत थकान महसूस हो रही थी। बिस्तर पर लेटते ही जैसे मैं बेहोश होगया.... अचानक मेरी आंखों के सामने स्वासिका प्रकट हुई.... 'आपने ऐसा क्यों किया मेरे साथ... ऐसे कैसे धोखा दे सकते हैं..... मैं चाहती थी कि गंगा के तट पर अंतिम संस्कार हो... लेकिन आपने...' उसकी आंखों से आंसू बह निकले। 'चलो इस बात की खुशी है कि आप मेरी अंत्येष्टि करने के लिए यहां तक आ गए... मैंने आपको माफ कर दिया...'

'स्वासिका.....स्वासिका' पुकारते हुए मैं नींद से जगा। होश संभालते हुए धीरे-धीरे खिड़की के पास गया और नीचे गंगा की ओर देखा, जहाँ नदी आधी जली, क्षत-विक्षत लाशों से भरी हुई थी। लेकिन इस गंगा तट पर आने पर जो दिव्य अनुभूति होती है वह कहीं और नहीं मिलती। स्वासिका... क्या तुम मुझसे नाराज़ हो कि मैंने तुम्हारा दाह संस्कार यहाँ नहीं किया...? मैं इस गंगा पर अनाथ की तरह तुम्हें बहते हुए देखने की कल्पना भी नहीं कर सकता.... मैं चाहता था कि जहाँ मैं हूँ तुम्हारा अंतिम विश्राम भी वहीं हो ताकि मैं अपना सुख-दुख तुम्हारे साथ साझा कर सकूँ..... रोज मैं तुम्हारे पास आ सकूँ.... तुम से बात कर सकूँ... हमारे बेटे को उसकी देवी जैसी माँ की कहानियाँ सुना सकूँ..... उससे मुझे कितनी खुशी मिलती है तुम अंदाज़ा भी नहीं कर पाओगी। मुझे एक बार भी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि तुम मुझसे बहुत दूर हो..... अब एक बात मेरी समझ में आई कि मनुष्य को कामनाओं की भाँति दुःखों से भी मुक्ति नहीं मिलती। अचानक किसी के दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनायी दी। मैंने जल्दी से दरवाज़ा खोला और देखा कि रूमबॉय खड़ा है, क्या आप अभी चैक आउट करेंगे ?

मुझे एहसास हुआ कि मुझे आज वापस जाना भी है। अब तक मैं किस सपनों की दुनिया में खो गया था? उसने फिर सवाल दोहराया..! रात के दस बजे की ट्रेन है। ठीक है, सर, उसने कहा कि वह बाद में आएंगे। अभी टाइम बहुत है। छह ही बजा था। जल्दी से पैकिंग खत्म करके एक बार फिर मैं धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतर के गंगा के किनारे गया। एक चिता तब भी जल रही थी। मेरी आंखें नम होती गयीं। थोड़ा समय वहाँ गुज़ारने के बाद मैं वापस रूम में आ गया। रूम बॉय मानो मेरा इंतज़ार कर रहा था, उसने बैग लेने की अनुमति मांगी और वह आगे निकल गया और मैं उसके पीछे। जब मैं स्टेशन पहुंचा तो ट्रेन प्लेटफार्म में थी। रात होने के कारण यात्री सोने की तैयारी कर रहे थे। मैंने भी लेटके सोने की कोशिश की।

लंबी यात्रा के बाद मैं अपने घर पहुंचा। घंटी बजाई और माँ ने दरवाज़ा खोला। उनकी उंगलियाँ पकड़ कर मेरा बेटा मुस्कुरा रहा था। वह मेरे कंधे पर कूद पड़ा और मुझे चूमने लगा। मैंने उसको दादी माँ के पास भेज दिया। तन-मन से मैं थका हुआ था। नहाकर थोड़ी देर आराम करने के बाद मैं शाम को अपने बेटे के साथ स्वासिका के स्मृति मंडप में गया। यहाँ से जाने से लेकर वापस आने तक के किस्से सुनाए और फिर खरीदी हुई चूड़ियाँ उसकी समाधि पर रख दीं। मेरा बेटा यह सब उत्सुकता से देख रहा था। उसने पूछा 'क्या माँ को चूड़ियाँ पसंद हैं...? हाँ, बेटा आपकी माँ को चूड़ियाँ बहुत पसंद हैं.....!! अगर पसंद है तो मम्मी ले क्यों नहीं रही है ? मम्मा पापा इतने प्यार से लाए हैं आपके लिए आप को चूड़ियाँ अभी पहननी चाहिए मैंने उसको गोद में उठाया और अपनी आँखें पोंछते हुए लड़खड़ाते कदमों से वापस चलने लगा..... !!!!!!!



बेस्ट फ्रेंड



श्री अनुराग शुक्ला
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

बेस्ट फ्रेंड या फिर जिगरी दोस्त !! आपका बेस्ट फ्रेंड कौन है ?? हम सभी का कभी न कभी इस प्रश्न से सामना अवश्य ही हुआ होगा। यह प्रश्न काफी रोमांचित कर देता है। आँखें बन्द कर के, पूरे मन से हम विशिष्ट व्यक्ति की चयन प्रक्रिया में सक्रिय मन हो उठते हैं। कुछ पलों की प्रोसेसिंग के पश्चात वह इष्ट चेहरा हमसे रूबरू हो उठता है। अक्सर वह खास व्यक्ति हमारे बचपन का एक मित्र होता है, या शायद ऑफिस का कोई सहकर्मी, या फिर कभी – कभी एक शानदार पड़ोसी, सफर या समारोह में मिला कोई बेहतरीन इंसान भी हमारे बेस्ट फ्रेंड का पद ले सकता है। कुछ लोगों की मित्रता पेड़ पौधों से भी होती है और कुछ उदहारणों में घर का एक पालतू पशु भी घनिष्ठता में बेजोड़ हो सकता है। यह भी आश्चर्यजनक नहीं होगा कि वर्तमान युग में अधिकांश लोगों का परम मित्र श्रीमान मोबाइल महाशय हो ??

ऐसा क्या होता है आपके बेस्ट फ्रेंड में जो उसको सबसे अनोखा बनाता है ???? वह जो कोई भी हो शायद उसके साथ आप बहुत सहज महसूस करते हैं। सब कुछ व्यक्त करने की आजादी का सुकून होता है। मुश्किल पलों में एक अच्छी सलाह या बेशर्त मदद का भरोसा होता है। उसके समीप बिताया एक-एक पल तनाव मुक्त होता है। उसकी संगत में जीवन की निराशाएँ मानो गुम सी हो जाती हैं। संक्षिप्त में कहें तो एक अनोखी विश्वसनीयता का अहसास जो कहीं और भी नहीं मिलता।

अब महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या ऐसा कोई बेस्ट फ्रेंड होता भी है या नहीं ?? क्या ऐसा कोई बेस्ट फ्रेंड है जो जीवन के हर पलों में उपरोक्त विस्तृत योग्यताओं में उपयुक्त होता है ?? और जीवन की हर विषमताओं में सदैव उपलब्ध रहता है ??? यह क्या हुआ ??? किस गंभीर विचार में खो गए आप ?? अरे ऐसा तो कोई भी नहीं है जो निरंतर हमारे जीवन में बेस्ट फ्रेंड का पात्र बना रहता है। सही मायने में एक बार जीवन उड़ान भरता है तो न जाने कितने हिचकोले खाने और उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ता है। जीवन के हर एक पड़ाव में एक न एक ऐसा शक्त्स मिल ही जाता है जो उस दौर में आपके बेस्ट फ्रेंड की भूमिका निभाता है और आपका सच्चा साथी बनता है। मगर प्रश्न फिर भी वहीं का वहीं है कि क्या ऐसा कोई नहीं है जो जीवनभर बेस्ट फ्रेंड की भूमिका निभाता हो ??? अब एक पल के लिए बचपन के ही अपने घनिष्ठ मित्रों को ले लीजिये, एक समय था जब उनके साथ में दिन-रात एक कर देते थे। साथ में समय कब बीत जाता था पता ही नहीं चलता था। वहीं मित्र आज के दौर में दूर-दूर हैं, अपने-अपने जीवन संघर्ष में व्यस्त। कभी कभार सोशल मीडिया के माध्यम से संपर्क में आते हैं। पुनर्मिलन की सिर्फ बात होकर रह जाती है, कोई तिथि या आयोजन निश्चित नहीं हो पाता। कुछ न कुछ बहाना या कारण होता ही है न करने का। जो कभी घंटों साथ बिताते थे वह एक दूसरे से मिलने का समय आज नहीं निकाल पाते। तो फिर क्या वह अब भी बेस्ट फ्रेंड की संरचना में फिट बैठते हैं

??? इसके उत्तर पर आप खुद ही विचार कर सकते हैं।

अंत में निष्कर्ष यह ही निकलता है कि उम्र भर साथ निभाने वाला शायद कोई भी बेस्ट फ्रेंड नहीं होता ?? मगर !! अगर मैं आप से यह कहूँ कि ऐसा कोई है जो यह भूमिका निभाता है और हर समय आपके पास रहता है। वह किसी भी अन्य बेस्ट फ्रेंड की तुलना में कहीं अधिक घनिष्ठता से यह भूमिका निभाता है ?? सच कह रहा हूँ मैं, है कोई ऐसा आपके जीवन में या फिर भविष्य में हो सकता है !!?? मैं कोई पहेली नहीं बुझा रहा, कुछ पाठकों को संभवतः मेरे इशारे का आभास भी हो रहा होगा !!?? मेरा उद्देश्य आपसे पहेली बुझाना नहीं है। बस आपके बहुमूल्य समय का कुछ अंश एक विषय पर अपने विचार रखने के लिये चाहता हूँ।

मेरा यह विचार है कि पति-पत्नी का रिश्ता एक बहुत ही अहम रिश्ता है। जीवन साथी कहते हैं न हम उसे, और क्या जीवन साथी से उत्तम भी कोई बेस्ट फ्रेंड हो सकता है भला ??? मगर न जाने क्यों यह पवित्र रिश्ता हमेशा सवालियों के कटघरे में खड़ा रहता है। आज के युग में तो यह चुनौती चरम पर है। क्या कारण हो सकते हैं ?? शायद अहम, एक दूसरे से अत्यधिक अपेक्षा, दूसरों से तुलना, एक दूसरे को समझने का प्रयास न करना, रूढ़िवादी सोच से ग्रसित होकर, या फिर अपने सबसे बहुमूल्य रिश्ते को अपना न समझकर संवादहीनता के परिणामस्वरूप, पूर्वधारणा से

ग्रसित होकर मन में किसी एक विचार को घर कर लेने से समस्या और भी जटिल बन जाती है। जबकि कोई भी बड़ा या छोटा नहीं है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। विवाह या जीवन साथी रेल की दो पटरियों की भांति नहीं है जो बिना हाथ मिलाए सारा सफर तय कर ले, अपितु यह तो उन दो लताओं का संगम हैं जो एक बार लिपट जाए तो ओर-छोर का अंतर ढूँड पाना असंभव है। आपकी किसी भी समस्या के समाधान की चाबी आप दोनों के ही पास है। दूसरा कोई भी न ही इसे महसूस कर सकता है और न ही कोई सार्थक प्रयास करता है। हमें अक्सर ही परायी वस्तुओं से अधिक प्रेम होता है और जो हमारा अपना है उसे हम नजर अंदाज करते हैं। चाँद की तारीफ में आपने न जाने कितने ही कसीदे, तारीफ, कविताएं या गीत आपने सुने होंगे !! मगर उस धरा के बारे में उतना नहीं



सुना होगा जो आपको जीवन प्रदान करती है, संरक्षण व भरण पोषण करती है। मगर हुजूर चाँद दूर से ही खूबसूरत लगता है। उसकी रंगत एक कवि की कल्पना से अधिक और कुछ भी नहीं है। एक पल के लिये आपको सच में चांद पर प्रेषित कर दिया जाए तो निश्चित रूप से त्राहिमाम कर उठेंगे। अर्थ यह है कि हमें अपने जीवन साथी को समझने में थोड़ा समय निवेश करना होगा। उसे क्या पसंद है, वह क्या सोचता या सोचती है, उसमें अगर कोई कमी है तो और आप उसको कैसे समझ सकते हैं और उससे उभरने में

उसकी सहायता कर सकते हैं। जब कभी वह उदास हो या अल्प आत्मविश्वास की चपेट में हो तो चट्टान

की तरह उसके साथ खड़े रहना है। अगर कोई शिकायत भी है तो साथ बैठकर बातचीत से उसका हल निकालना है।

आज के दौर में यह अनूठा रिश्ता अभूतपूर्व समस्याओं से गुजर रहा है। युवा पीढ़ी की सोशल मीडिया पोस्ट में 'आई एम सिंगल नॉट रेडी टू मिंगल, मेन / वुमेन नॉट रिक्वायर्ड' जैसी बातें आम हो रहीं हैं। यह भ्रम किस लिये है। शायद इस डर, भ्रम व संशय की वजह आज का बदलता समाज है। यहाँ ड्राइवोर्स की सलाह देने वाले अनगिनत हैं मगर हल निकालने वाले नदारद हैं। एक छोटी सी घटना आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। मेरी जान पहचान में एक रिश्ता कुछ ऐसी ही कश्मकश से गुजर रहा था। ड्राइवोर्स की अर्जी दाखिल हो चुकी थी और वकील - वकील का खेल शुरू हो गया था। पति व पत्नी दोनों ही मुझसे परिचित थे, दोनों का ही व्यक्तित्व बेहतरीन था और ऐसी कोई गंभीर वजह नहीं थी कि एक दूसरे के साथ न रहा जा सके। मगर दोनों के पास ही यह गलत है वह बुरा है, ऐसा किया वैसा किया की एक सूची थी और पृथक होना ही एक समाधान नजर आ रहा था। मैंने कहा बात तो सही है ऐसे व्यक्ति के साथ क्यों रहना जिसमें खामियों ही खामियाँ हैं। तो क्या फिर खामियों से इतर खूबियाँ शून्य हैं ??? अपनी इस जिज्ञासा हेतु दोनों से अलग-अलग एक ही प्रश्न किया ?? मैंने पूछा आपने जो शिकायते या घटनाएं बताई अगर उसमें व्यतीत पलों को समय की घड़ी में परिवर्तित किया जाए तो ज्यादा से ज्यादा 24 से 48 घंटे ही आएंगे। मगर विवाह को तो 4 वर्ष हो चुके हैं और क्या इन चार वर्षों में ऐसा कुछ भी अच्छा नहीं हुआ और क्या आप दोनों की नज़र में एक दूसरे में कोई भी खूबी नहीं है !!? दोनों ने जब ईमानदारी से विवेचना की तो पाया की वह 48 घंटे हिसाब किताब में बौने नजर आ रहे थे। अक्सर होता भी यही है, कोई एक वजह इतना हावी हो जाती है कि उसमें लाखों खूबियाँ नजरअंदाज हो जाती हैं। यही वह वक्त है जब हमें विवेक का परिचय देना है। एक वजह उन अनेक खूबियों को

बेमानी नहीं कर सकती क्योंकि यहाँ बात एक अनमोल रिश्ते की है। तोड़ना आसान है मगर एक आशावादी विचार से अगर आप इस रिश्ते को सींचते हैं अपनी सहिष्णुता से, स्नेह से, समझ से, धैर्य से, समर्पण से... तो यकीन मानिये कालांतर में अपने निर्णय पर आपको गर्व होगा। मेरा मतलब है आपके एक सार्थक प्रयास करना है, वह सब कुछ जो आप कर सकते हैं। जिन दो पात्रों का जिक्र मैंने कुछ देर पहले किया उन्होंने अपने मतभेद सुलझा लिये हैं, बस थोड़ी सी समझ से और दोनों साथ में बहुत खुश भी हैं।

एक सकारात्मक विचार से निश्चित ही हम उस भ्रम या संशय को मिटा सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप यह रिश्ता सवालियों के कटघरे में हैं। क्या विचार कर रहे हैं आप ?? चलिये बेस्ट फ्रेंड न भी सही एक बार सिर्फ फ्रेंड ही समझ लीजिये। थोड़ा प्रयास तो बनता है। यह रिश्ता कोई हिसाब किताब नहीं है जो नफा नुकसान निकाला जा सके, यह तो एक बेहतरीन सफर है जहाँ दो अनजान व्यक्ति साथ मिलकर एक सफर का आरंभ करते हैं तो फिर रेल की पटरियों की तरह नहीं अपितु हाथ पकड़कर साथ चलना है। इस मधुर रिश्ते के महत्व को समझना होगा। पाने से पहले समर्पण की भावना उजागर करनी होगी। जीवन कभी वन वे ट्रेफिक नहीं होता। अगर आप साथ, भरोसा, संवेदनशीलता, सूझबूझ का निवेश इस रिश्ते में करेंगे तो यकीनन इसका रिटर्न किसी भी निवेश की तुलना में अतुलनीय होगा। कोई भी शत प्रतिशत अच्छा या बुरा नहीं होता, यह पैमाना ही गलत है सब समझ का फेर है। कमियों का पूरक बनकर उसमें सुधार करना सीखिये, फिर देखिये आप अपने जीवन साथी का विरह कुछ पल भी बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। तो फिर कैसा लगा आपको अपना यह नया बेस्ट फ्रेंड ??? नहीं-नहीं बचपन वाला साथी भी आपका बेस्ट फ्रेंड ही है !! मगर यह वाला कुछ खास है, थोड़ा विचार कीजिये ???!!!



एक अनोखा ख्वाब



श्रीमती उषा बर्ती
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

गुब्बारों और खिलौनों से घिरी हुई थी तनमय की जिंदगी। लेकिन उसकी बिज़ी जिंदगी बेरंगीन थी। नौ साल का बच्चा था तनमय। उसके पिताजी गुब्बारे बेचने वाले थे। गली-गली में घूम घूमकर सुबह से श्याम तक वह गुब्बारे और खिलौने बेचते थे। उसकी माँ पास के एक बड़े घर में बर्तन साफ करने के लिए जाया करती थी। तनमय का स्कूल भी घर के नजदीक था। अचानक एक दिन उसकी माँ बीमार पड़ी। जितना पैसा इकट्ठा करके रखा था वो पूरा माँ के इलाज के लिए खर्च किया। फिर भी उसकी बीमारी ठीक नहीं हुई और वो चल बसी।

माँ के गुजरने के बाद उसे स्कूल छोड़ना पड़ा और वो अपने पिताजी के साथ गुब्बारा बेचने के लिए निकला। उसके गाँव में एक नदी थी। वहाँ हर गर्मी की छुट्टियों में चालीस दिन के लिए मेला लगता था। मनोरंजन के लिए सर्कस, नाच-गाना तथा फिल्म शो आदि का आयोजन किया जाता था। मेले में बहुत से बच्चे अपने परिवार वालों के साथ आते और बहुत मज़ा लेते थे। उनको देखकर तनमय को अपनी माँ की बहुत याद आती थी। माँ उससे हमेशा कहा करती थी "छोटू तुम बड़े होकर सेना का अफसर बनना और देश का नाम रोशन करना.....यही मेरा सपना और प्रार्थना है। उसकी आंखें तब आँसुओं से भर जाती और वो बोलता.....“ये कैसा अनोखा ख्वाब है.....सपना देखने का भी हक नहीं है हमें

.....फिर भी दिल बार बार ऐसे क्यों सोचता है ?”

उस मेले में तनमय को एक दोस्त मिला.....संजय। संजय के पिता वहाँ के सर्कस के जानवरो की देखभाल करने का काम करते थे। एक दिन संजय अपने दोस्त तनमय को सर्कस के जानवरों को दिखाने लेकर गया। हाथी, शेर, घोड़ा, कुत्ते आदि जानवरों को देखकर तनमय बहुत खुश हुआ। उसी दिन रात को मेले में एक फिल्म भी चल रही थी.....‘हाथी मेरा साथी’। फिल्म देखने के बाद तनमय को हाथी-सवारी करने की कड़ी इच्छा पैदा हो गयी। रात को सपने में उसने हाथी को देखा और उस दिन के पश्चात दिन-रात उसका एक ही ख्वाब था.....हाथी की सवारी करना।

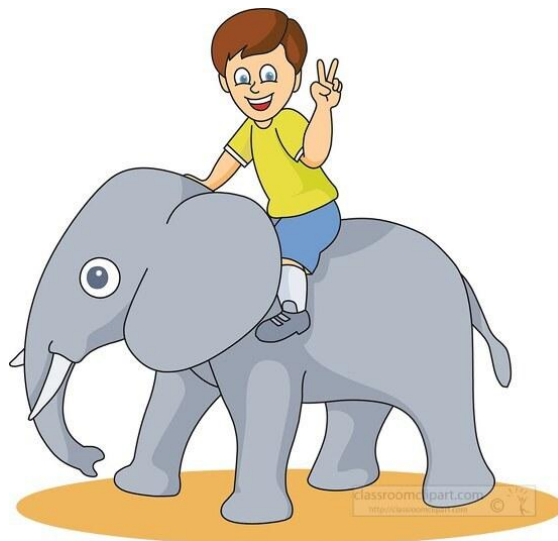
एक दिन वो दोनों गप्पे मारने के बाद नदी के किनारे बैठे थे। तब एक धनी परिवार मेला देखने आया। उनके जुड़वा बच्चे थे। उन्होंने शानदार कपड़े और कीमती शूज पहने हुए थे। तनमय और संजय गुब्बारे बेचने उनके पास गए। उन्हें देखकर उनका पिता गुस्सा होकर बोला.....“नालायक बच्चे कहीं के.....मेरे बच्चों के पास मत आना। नहीं चाहिए हमें तुम्हारे घटिया गुब्बारे।” उदास होकर वो दोनों फिर वहीं किनारे पर जाकर बैठ गए। इधर वो परिवार के लोग नदी के पानी में खेल रहे थे। कुछ 10-15 मिनट बाद एक जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। तनमय और

संजय दौड़कर वहा गए तो देखा की दोनों जुड़वा बच्चे पानी की बहती धारा में फँस गए और उसके पिता उन्हें बचाने का प्रयास कर रहे थे। तनमय और संजय नदी में कूद पड़े और उनके पिता को मदद देकर दोनों बच्चों को बचा लिया। उनका पिता बहुत शर्मिदा था। "मैंने आप लोगों से बुरी तरह बरताव किया.....फिर भी तुम ने मेरे बच्चा को बचाया", ऐसा कहकर दोनों को गले लगाया और माँफी मांगी।

जब मेले का खत्म होने का वक्त आया तब तनमय और संजय बहुत दुखी थे। गुजरे हुए अच्छे वक्त के बारे में वो बातें करते रहे। तब उनके पास एक कार आकर रुकी। उसमें से वो जुड़वा बच्चों के पिता निकले और बोले "आप लोगों के लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूँ मैं।" मेरे बच्चों की जान बचाने के लिए तुम लोगों ने जो जोखिम लिया उसके लिए तुम्हें अवार्ड मिलने वाला है। प्रधानमंत्री बाल सम्मान के लिए तुम दोनों चुने गए हो। गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली जाकर तुम्हें अवार्ड लेना होगा। दिल्ली जाने के लिए रेलगाडी की टिकट, नये कपड़े आदि देकर उन्होंने विदा ली।

26 जनवरी को तनमय और संजय अपने नए कपड़े पहनकर राजपथ, नई दिल्ली पहुँच गए। वहाँ उनके जैसे पंद्रह बच्चे थे जिनको अवार्ड मिलने वाला था।

तब उन्होंने देखा की कुछ दूर दस हाथी पूरी सजावट के साथ तैयार होकर खड़े थे। आयोजन करने वाले एक अफसर ने बोला "जो बच्चे अवार्ड लेने के लिए आए हैं उनको राजपथ पर हाथी सवारी करके परेड में शामिल होकर प्रधानमंत्री से अवार्ड हासिल करना है।" संजय ने तनमय को गले लगाया और बोला "यार....., तेरा ख्वाब अब होगा पूरा..... भगवान का लाख-लाख शुक्र है।" हाथी पे सवार होकर वे मंच तक पहुँचे। प्रधानमंत्री से अवार्ड ग्रहण किया तब उनकी वीरता के बारे में घोषणा हो रही थी। साथ ही साथ उनके लिए एक सरप्राइज़ भी था। उनके बारे में जानकर सरकार ने ये फैसला लिया कि उन दोनों बच्चों को स्कालरशिप के साथ सैनिक स्कूल में पढ़ने का अवसर भी दिया जाएगा। ये घोषणा सुनकर खुशी से तनमय की आंखे भर आई। आसमान की ओर देखकर उसने अपनी माँ से बोला "मेरा ख्वाब तो साकार हो गया..... जल्दी ही आपका सपना भी पूरा हो जाएगा..... मैं जल्दी ही बनूँगा सैनिक अफसर।" उसके लिए मैं पूरी लगन से कठिन प्रयत्न करूँगा।



केरल-

एक अनोखा अनुभव



सुश्री शेबा पी एच
उप महालेखाकार

मैं एक साधारण लड़की थी पर बड़े शहर चेन्नै में रहती थी। कॉलेज में पढते समय केरल आने का एक अवसर मिला था। यह डेढ महीने के एक इंजिनियरिंग प्रोजेक्ट के सिलसिले में था, एक बड़ी इंडस्ट्री में प्रतिभागी के रूप में भाग लेना था। मुझे इस प्रोजेक्ट में भाग लेने की बड़ी इच्छा थी। बहुत ही भक्ति और ईमानदारी से भगवान और माता-पिता से आर्शीवाद लेकर आवेदन पत्र भरकर भेजा था। हाथ में आया हुआ यह सुनहरा मौका मैं

ऐसे कैसे जाने देती। तमिलनाडु के कोयम्बतूर शहर के पास में ही था यह अति सुंदर शहर, नाम था पालक्काडु। चेन्नै से कोयम्बतूर गयी वहां से पालक्काडु का रस्ता पकड़ लिया। आखिर में हम कंजिकोड पहुंचे। यह एक बहुत ही सुंदर और आकर्षक टाउनशिप था। वहां की इंजिनियरिंग इंडस्ट्री बहुत बड़ी थी। जंगल के काफी नजदीक था यह टाउनशिप। इंजिनियरिंग फैक्टरी के साथ ही सब सुविधाएं थी। कार्यालय कैंटीन, आवासीय घर, पार्क, अस्पताल, मैदान सब कुछ पास में ही था। पूरा इलाका पेड़ों से घिरा हुआ था। जंगल जैसा ही था। तरह-तरह के हिरण, मोर, जंगली सुंअर, सांप, नेवला, साही, कठफोडवा, जंगली बिल्ली सब कुछ देखने को मिलता था।

पहला दिन जैसे ही इंस्टिट्यूट में प्रवेश कर रही थी एक जंगली सुंअर मुझे घूरते हुए नजर आया। डर के मारी मैं एक दम अपने कमरे में वापस आयी। अगले दिन मेरे साथ दो लड़कों को भी लेके आयी। दोनों दिल्ली के थे। हम तीनों को छोड़कर बाकी सब केरला के ही थे। सब से दिलचस्प चीज यह थी कि इंस्टिट्यूट के पीछे



नरकमपळ्ळी नदी बहती थी और उधर से हाथियों के आने-जाने का रस्ता था। पिछवाड़े में एक घास का मैदान था। दो हाथी वहां धूप सेंकते हुए खड़े



थे। हम आश्चर्यचकित हो कर देखते रह गए। ऐसा नजारा तो सबके नसीब में नहीं होता है।

सितंबर का महीना था और बीच में ओणम का त्योहार आया। ओणम के पहले वाले दिन हम सब तैयारी में लगे थे और तिरुओणम के दिन हम सज-संवर कर मलयाळी लडकियों की तरह तैयार हो गयी और मिलकर अत्तपूक्कळम (फूलों की रंगोली) बनाने के काम में लग गए। तोवाला नाम की जगह से विभिन्न रंगों के भिन्न प्रकार के फूल लेके आ गए थे। पीले, बैंगनी, लाल, सफेद रंगों के फूल। गुलाब, कमल भी तरह-तरह के लेके आए थे। हम लोगों ने बहुत ही सोच-विचार करके तरह तरह के डिजाइनों की रंगोलियां बनायी। मन ही मन अत्यधिक आनंद हो रहा था। ऐसा अवसर तमिलनाडु में कभी नहीं मिला था। उसके बाद तिरुवातिरा नृत्य था। इसमें सब महिलाएं वृत्ताकार में खड़ी होकर नाचती हैं। मैं भी उनमें शामिल हो गयी। धीरे ही सही डान्स स्टेप्स मैंने भी पकड़ लिया। उसके बाद मनोरंजन का समय था। केरल के तरह तरह के खेल खेले गए जैसे कैकोट्टिकळी, वडंवली (रस्साकशी), ऊञ्जाला (झूला झूलना), उरियडी (हांडी फोड़) और ओणतल्लु।

रस्साकशी महिलाओं और पुरुषों के बीच हुई थी और हांडी फोड़ स्पर्धा आंखों में पट्टी बांधके लायी गयी थी। मैंने इन सब में भाग लिया था। और मुझे उपहार भी मिला था। उसके बाद ओणम

का बड़ा खाना, सद्या खाने के लिए बैठ गए। हम तीन जन जो केरल के नहीं थे, यह बहुत ही विस्मयकारी था। मलयाली दोस्तों ने हमको सद्या के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विभिन्न पकवानों और सब्जियों को कैसे खाना है वह समझाया। पहले हमें समझ में नहीं आ रहा था इतने बिल्ड अप की क्या जरूरत है। अचार और पायसम ही तो है। लेकिन एक बार हमने खाना शुरू किया तो हमें अंतर का आभास हुआ।

सफेद रंग की जरी वाली साड़ी और लुंगी पहनके हम खाने को बैठ गए। केले के पत्ते में ढेर सारे पकवान और तरकारियां भरी पड़ी थी। अदरक करी, नींबू व आम का अचार, अवियल, तोरन न जाने क्या-क्या ! ये सब एक के बाद एक करके आर्डर में खाना था। मोटे चावल के साथ



दाल, पापड और घी पहले खाना था। फिर साम्बर और उसके बाद तीन-तीन तरह के पायसम। अडपायसम, इसे केला के साथ खाना था, साथ में कडला पायसम और पालपायसम के साथ घी में बनी बोळी भी परोसी गयी। आखिर में रसम या कडी के साथ चावल खत्म करना है। हमने पूरे दिल से इन सबका आस्वादन किया। रात के समय घरवालों को खुश खबरियां सुनाके, नए अनुभव बांटके मुझे अंदर ही अंदर बहुत खुशी हो रही थी।

हमारा प्रोजेक्ट खत्म हुए बहुत साल हो गए हैं लेकिन इस अनुभव का प्रभाव और यादें दिल और दिमाग में अभी भी छाया हुआ है और इस बारे में कितनी भी बार बोले थकती नहीं। मलंपुषा बांध में जाना और रोपवे में बैठके वहां के पूरे नजारों का लुत्फ उठाना यह सब जिन्दगी में कभी न भूलने वाला अनुभव है।



श्री अतुल कृष्ण डी
सुपुत्र कृष्णकुमार वी जी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गोवा तक हमारे सपनों का सफर

यात्रा जीवन के सबसे खूबसूरत अनुभवों में से एक है, जो हमें नई जगहों को खोजने, नई यादें बनाने और रोमांच महसूस करने का मौका देती है। मेरे और मेरे भाई के लिए, गोवा जाना हमेशा से एक सपना था- हमने न जाने कितनी बार इसके सुनहरे समुद्र तटों, ऐतिहासिक किलों और जीवंत संस्कृति की कल्पना की थी। हमारी अनगिनत गुजारिशों से खुश होकर, आखिरकार हमारे पिताजी ने इस यादगार पारिवारिक रोड ट्रिप के लिए हामी भर दी और हम केरल से गोवा के सफर पर निकल पड़े।

बहुप्रतीक्षित यात्रा की शुरुआत

रोड ट्रिप का सिहरन ही कुछ अलग होता है। सुबह जल्दी बैग पैक करना, कार में सामान लोड करना और सूरज उगने से पहले सफर शुरू करना एक अनोखी यात्रा का एहसास दिलाता है। हमारे

पिता कार चला रहे थे और हम एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े, रास्ते में पहाड़ी सड़कों, घने जंगलों और खुली हरी-भरी वादियों का आनंद लेते हुए। हर राज्य की अपनी अलग खूबसूरती थी। कर्नाटक की ठंडी, धुंध भरी सड़कें धीरे-धीरे गोवा की गर्म और तटीय हवाओं में बदल गई। रास्ते में कई छोटे-बड़े स्टॉप भी आए कभी सड़क किनारे चाय की दुकान, कभी किसी पहाड़ी का व्यू पॉइंट, तो कभी किसी ढाबे पर स्वादिष्ट नाश्ता। सफर के दौरान कभी सड़कों पर गाड़ियों की भीड़-भाड़ होती, तो कभी मीलों दूर तक बस एक लंबा सुनसान हाईवे दिखता।

रास्ते में कई जगह हमने छोटे-छोटे चक्कर भी लगाए, जिससे सफर और रोमांचक हो गया। हमारे पिता की संतुलित ड्राइविंग की वजह से हम सफर के हर पड़ाव को अच्छे से महसूस कर पाए। गाड़ी में हल्का म्यूजिक बजता रहा, कभी मैं और मेरा भाई खिड़की से बाहर का नज़ारा देखते, तो

भी गानों को लेकर बहस करने लगते। सफर अपने आप में ही एक यादगार अनुभव बन गया।

गोवा में प्रवेश: एक सपना सच हुआ

तीन दिन की लंबी यात्रा के बाद, जब हमने गोवा की सीमा पार की, तो हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। चारों तरफ नारियल के पेड़, पुर्तगाली शैली के रंग-बिरंगे घर और सड़क के किनारे बसा अनोखा तटीय जीवन देखकर हम रोमांचित हो उठे। समुद्र की नमकीन हवा हमारे चेहरे से टकरा रही थी और पहली बार सुनहरी रेत और नीले समुद्र को देखकर सारी थकान गायब हो गई।

पहला दिन: पणजी, पुराना गोवा और लोकल बाजारों की सैर

हमारी पहली मंज़िल गोवा की राजधानी पणजी थी। यह शहर अपने रंगीन घरों, संकरी गलियों और चहल-पहल वाले बाजारों के लिए जाना जाता है। पणजी के फाउंटेनहास इलाके में घूमना एक अलग ही अनुभव था। यहाँ की पुरानी पुर्तगाली शैली की इमारतें और गलियों का आकर्षण हमें किसी और समय में ले जाता था। हमारे पिता हमें शहर के अलग-अलग हिस्सों में घुमाते रहे, ताकि हम गोवा की असली खूबसूरती को महसूस कर सकें। दिन की सबसे खास जगह थी बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में शामिल है। इस चर्च के अंदर कदम रखते ही इसकी भव्यता और ऐतिहासिक महत्व का एहसास हुआ। यहाँ सेंट फ्रांसिस जेवियर के अवशेष रखे गए हैं, जो इसे और भी खास बनाते हैं।

शाम को हमने एक लोकल बाज़ार में घूमते हुए गोवा के हैंडीक्राफ्ट, सजावटी सामान और पारंपरिक मिठाइयों का आनंद लिया। हमने बेबिका, जो कि गोवा की एक प्रसिद्ध मिठाई है, चखी और इसे तुरंत पसंद कर लिया।



दूसरा दिन: समुद्र तटों की सैर और वॉटर स्पोर्ट्स का मजा

गोवा आएँ और समुद्र तटों की सैर न करें, ऐसा हो ही नहीं सकता! हमारा पहला पड़ाव था कलंगुट बीच, जो गोवा के सबसे बड़े और लोकप्रिय समुद्र



तटों में से एक है। यहाँ का नज़ारा बहुत ही जीवंत था कोई रेत के घर बना रहा था, कोई पैरासेलिंग कर रहा था, तो कोई लहरों के बीच मस्ती कर रहा था। हमने वहाँ बनाना बोट राइड करने का फैसला किया। जैसे ही नाव तेज़ी से समुद्र की लहरों पर दौड़ने लगी, हम चीखने-चिल्लाने लगे, डर और मज़े का अनोखा मिश्रण था। आखिरकार जब हम पानी में गिरे, तो हम सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे। इसके बाद हमारे पिता हमें बागा बीच लेकर गए, जहाँ की नाइटलाइफ और एडवेंचर स्पोर्ट्स बहुत प्रसिद्ध हैं। वहाँ हमने पैरासेलिंग की, और जैसे ही पैराशूट ने हमें हवा में ऊपर उठाया, ऐसा लगा जैसे पूरा समुद्र हमारे नीचे फैला हो। वो नज़ारा हमें हमेशा याद रहेगा।

दिनभर के रोमांच के बाद, हम एक समुद्री किनारे बने रेस्तरां में बैठ गए, जहाँ हमने ताज़े नारियल पानी के साथ गोवा की प्रसिद्ध डिश प्रॉन बालचाओ का स्वाद लिया। ठंडी समुद्री हवा और स्वादिष्ट भोजन ने दिन को और भी यादगार बना दिया।

तीसरा दिन: अगुआड़ा किला और दक्षिण गोवा की शांति

यात्रा के आखिरी दिन, हमारे पिता हमें अगुआड़ा किला लेकर गए, जो गोवा के सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। अरब सागर के किनारे बसे इस 17^{वीं} शताब्दी के किले से गोवा के खूबसूरत नज़ारे दिखते हैं। किले की मोटी पत्थर की दीवारों पर चलते हुए ऐसा लगा जैसे हम इतिहास के किसी हिस्से को छू रहे हों।

इसके बाद हम दक्षिण गोवा के पलोलम बीच गए, जो अपनी शांत और सुरम्य खूबसूरती के लिए जाना जाता है। यहाँ न तो भीड़ थी, न ही तेज़ संगीत बस लहरों की हल्की गूंज और नारियल के

झुमते पेड़। हमने वहाँ कयाकिंग की और समुद्र के बीचो-बीच जाकर शांति का आनंद लिया।

शाम को, हमने समुद्र किनारे बैठकर सूरज को डूबते देखा। आसमान का रंग धीरे-धीरे नारंगी और बैंगनी हो गया और लहरें सुनहरी रोशनी में चमकने लगीं। यह नज़ारा हम कभी नहीं भूलेंगे।

यादों से भरी वापसी यात्रा

यात्रा खत्म होने का समय आ गया था और हम फिर से लंबी सड़क यात्रा के लिए तैयार हो गए। हमारे पिता एक बार फिर कार चलाते हुए हमें घर वापस ले जा रहे थे। लेकिन इस बार सफर में पहले जैसी अधीरता नहीं थी, बल्कि हमने हर पल को याद किया और उन खूबसूरत लम्हों पर चर्चा की जो हमने गोवा में बिताए थे। कार में म्यूजिक बजता रहा और मैं और मेरा भाई बीच-बीच में ऊँघते रहे। इंजन की हल्की गड़गड़ाहट और सड़क का सफर हमें किसी लोरी की तरह महसूस हो रहा था।

निष्कर्ष: यात्रा का जादू

इस पारिवारिक रोड ट्रिप ने हमें सिर्फ एक यात्रा का नहीं, बल्कि जीवनभर की यादों का उपहार दिया। गोवा का हर पल-समुद्री तटों का रोमांच, ऐतिहासिक स्थलों की खोज और शांत प्राकृतिक नज़ारे हमारे दिल में बस गए हैं।

यात्रा सिर्फ किसी जगह पर जाने के बारे में नहीं होती, बल्कि सफर के दौरान बनाई गई यादों, अनुभवों और कहानियों का एक खूबसूरत संग्रह होती है। और इस यात्रा ने हमें यह सिखाया कि कुछ सपने सच में एक लंबी ड्राइव के लायक होते हैं।

मार्क्स ऑरेलियस के “द मेडिटेशन”



श्री वी. बीजू श्रीधर
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

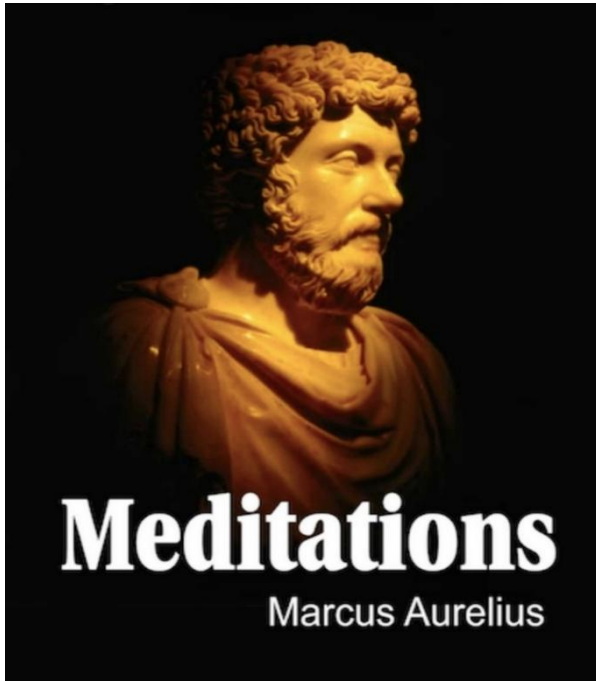
इसमें कोई दो राय नहीं होगी अगर यह कहा जाए कि जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें आगे बढ़ने के लिए शिक्षा सबसे बड़ी सहायक है। हालाँकि, शिक्षा से हमारा मतलब आमतौर पर स्कूलों, विश्वविद्यालयों में जाना और लाभकारी रोजगार प्राप्त करने के लिए डिग्री हासिल करना है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा को हमारे अहंकार को संतुष्ट करने के लिए वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक स्थिति प्राप्त करने का एक साधन माना जाता है, न कि अपने आप में एक लक्ष्य। कुछ लोग कह सकते हैं कि शिक्षा ज्ञान की आजीवन खोज है। अब, अगर ज्ञान तथ्यों का अधिग्रहण और उन्हें फिर से दोहराना है, या सबसे अच्छा जब जरूरत हो तो उन्हें लागू करना है, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संदर्भ में, इसे याद करने की प्रभावशाली क्षमता के साथ तथ्यात्मक ज्ञान का ऐसा अधिग्रहण निकट भविष्य में किसी काम का होगा? इसका मतलब यह नहीं है कि पहले सिद्धांतों का ज्ञान हमेशा हमारे लिए फायदेमंद रहेगा। अब, जब तथ्यात्मक ज्ञान और विलक्षण स्मृति का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा, तो फिर हम इस जटिल दुनिया में आगे बढ़ने के लिए किसकी ओर देखेंगे? यह हमें शिक्षा के दूसरे आयाम में ले आता है, जो मूर्त बाहरी दुनिया के विपरीत आंतरिक अमूर्त दुनिया से संबंधित है। एक निर्विवाद आंतरिक दुनिया है,

जहाँ हम रहते हैं, जिसे मन/चेतना कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य एक द्वीप नहीं है और इसलिए, हमारे साथी मनुष्यों के साथ बातचीत जीवन का एक निर्विवाद हिस्सा है। क्या हमारी शिक्षा हमें घटनाओं और परिणामी भावनाओं, पारस्परिक संबंधों को नेविगेट करने आदि के लिए कौशल प्रदान करती है। दुखद सच्चाई यह है कि यह प्रश्न केवल नकारात्मक प्रतिक्रिया ही देता है। प्राचीन काल से ही मनुष्य आंतरिक दुनिया के सवालों के जवाब तलाशता रहा है और विभिन्न महान ऐतिहासिक हस्तियों ने ऐसे सवालों के जवाब देने की कोशिश की है, जिसे आमतौर पर 'दर्शन' कहा जाता है। मूल रूप से, हम दर्शन की पूर्वी और पश्चिमी प्रणालियों के बारे में जानते हैं। पूर्वी में भारतीय (हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म आदि), चीनी (ताओवाद, कन्फ्यूशीवाद) आदि शामिल हैं, जबकि पश्चिमी दर्शन प्राचीन ग्रीस और रोम से हैं। स्टोइकवाद पश्चिमी दर्शन की एक शाखा है, जिसका जन्म प्राचीन ग्रीस में हुआ था। स्टोइक मानते थे कि सगुणों का अभ्यास एक अच्छा जीवन जीने के लिए पर्याप्त है। स्टोइक ने इसे प्राप्त करने के मार्ग की पहचान रोज़मर्रा की ज़िंदगी में चार मुख्य सदूणों - विवेक, धैर्य, संयम और न्याय के साथ-साथ प्रकृति के अनुसार जीने में बिताए गए जीवन से की। मार्क्स ऑरेलियस (121-180

ई), एक रोमन सम्राट (161-180), ऐसे ही एक स्टोइक दार्शनिक थे। उपरोक्त सिद्धांतों पर आधारित उनके लेखन का व्यक्तिगत संग्रह 'द मेडिटेशन' शीर्षक से है। उनके लेखन का सार नीचे दिया गया है:

1. खुशी का रास्ता एक उचित मानसिक स्थिति बनाए रखना और तर्क के निर्देशों का पालन करना है। ऐसा करने का एक त्वरित तरीका है कि आप वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करें और जो कुछ भी आप नियंत्रित नहीं कर सकते हैं उसको स्वीकार करें और उन चीजों पर उचित प्रतिक्रिया दें। यह उन लोगों के लिए जीवन भर की शांति का कारण बन सकता है जो प्रयास करते हैं।

2. भले ही मनुष्य के पास ईश्वरीय तर्क तक पहुँच हो, फिर भी कभी-कभी हम गलतियाँ करते हैं। इसका सबसे अच्छा जवाब गुस्सा नहीं है, बल्कि समाधान की तलाश में उस कारण की अपील करना है।



3. दूसरे लोग कैसे सोचते हैं, यह हमारे नियंत्रण से बाहर है। हालांकि, हमारे दिमाग का काम ही हमें खुश और दुखी करता है और हमें इस पर बहुत ध्यान देना चाहिए।

4. हम समाज में व्यक्तियों के रूप में रहते हैं। अगर समाज को नुकसान पहुँचाया जाता है, तो हमें भी नुकसान क्यों नहीं पहुँचना चाहिए? यह महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें और केवल चिंतन और अलगाव में न डूब जाएँ।

5. अधिकांश लोग इस तथ्य को अनदेखा करते हैं कि वे किसी दिन मरने वाले हैं। जबकि यह समझना आसान है कि लोग ऐसा क्यों करते हैं, यह हमारे वर्तमान जीवन जीने की क्षमता के लिए हानिकारक है। मृत्यु के तथ्य को मझकर, हम जीवन का बेहतर उपयोग कर सकते हैं।

6. ब्रह्मांड में हर चीज हमेशा परिवर्तनशील होती है। चूंकि यह प्रकृति का एक हिस्सा है, इसलिए चिंता करने की कोई बात नहीं है। जबकि परिवर्तन हमारे लिए कठिन हो सकता है, इसे अपनाना हमारे हित में है।

7. सिर्फ इसलिए कि आपने कोई समस्या पैदा नहीं की, इसका मतलब यह नहीं है कि आप सुरक्षित हैं।

8. अच्छे कामों के प्रति समर्पण का मतलब अक्सर अच्छा करने की ज़रूरत होती है, न कि सिर्फ गलत काम करने से बचने का कर्तव्य।

9. सद्गुण प्रकृति के अनुसार कार्य करना है, जो प्रकृति के विपरीत है वह तर्कहीन है और दुख का कारण बनता है।

10. सभी लोग एक जैसे हैं और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ



श्री गोपेश कुमार
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) भारतीय लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है, जो वित्तीय पारदर्शिता और प्रशासनिक जवाबदेही को सुनिश्चित करता है। संविधान द्वारा स्थापित यह स्वतंत्र संस्था सरकारी वित्तीय रिकॉर्ड्स की गहन जांच करती है और नीतिगत सुधारों में महत्वपूर्ण योगदान देती है। सीएजी का प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सार्वजनिक धन का उपयोग सही ढंग से, प्रभावी ढंग से और कानून के अनुरूप किया जाता हो।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

सीएजी की स्थापना सन् 1858 में ब्रिटिश शासन के दौरान हुई थी। प्रारंभ में, यह संस्था ब्रिटिश सरकार के अधीन कार्य करती थी। हालांकि, सन् 1950 में भारत की स्वतंत्रता और भारतीय संविधान के लागू होने के बाद, सीएजी को स्वतंत्र और संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 में सीएजी की शक्तियों, कार्यों और जिम्मेदारियों को परिभाषित किया गया है।

सीएजी का कार्यालय 'जनता के धन का एक संरक्षक' के रूप में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करता है कि जनता के धन का सही स्थान पर खर्च होता है और राष्ट्र के विकास में उसका योगदान होता है। सीएजी एकमात्र ऐसी संस्था

है जो संसद और राज्य विधानसभाओं की जवाबदेही सुनिश्चित करती है और इसके निष्कर्षों का प्रशासनिक और नीतिगत प्रक्रियाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

प्रमुख भूमिकाएं और जिम्मेदारियां:

सीएजी की जिम्मेदारियों का दायरा व्यापक है और इसमें निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं:

- **लेखापरीक्षण:** सरकारी मंत्रालयों, विभागों और सार्वजनिक उपक्रमों के वित्तीय अभिलेखों का गहन ऑडिट करना। इसमें सरकारी व्यय की पारदर्शिता, दक्षता और स्थापित मानदंडों के अनुपालन को सुनिश्चित करना शामिल है।
- **वित्तीय नियमों की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करना कि सरकारी व्यय और राजस्व संग्रह कानूनी प्रावधानों के अनुरूप हो।
- **विशेष जांच:** संसद या सरकार के निर्देशानुसार विशिष्ट मामलों की विशेष जांच करना और रिपोर्ट तैयार करना।
- **संसदीय रिपोर्टिंग:** प्रशासनिक पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए संसद और राज्य विधानसभाओं को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

- नीतिगत सुझाव: ऑडिट निष्कर्षों और अवलोकनों के आधार पर प्रशासनिक और वित्तीय सुधारों के लिए मूल्यवान सुझाव प्रदान करना।

महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ:

सीएजी ने प्रशासनिक सुधारों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें कई वित्तीय अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के मामलों का पर्दाफाश शामिल है। इन खुलासों ने न केवल सार्वजनिक धन के दुरुपयोग के उदाहरणों को उजागर किया है, बल्कि सरकार को पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए उपाय लागू करने के लिए भी प्रेरित किया है। कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- ❖ 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन: सीएजी की रिपोर्ट ने 2जी स्पेक्ट्रम लाइसेंस के आवंटन में महत्वपूर्ण अनियमितताओं को उजागर किया, जिससे राजस्व को भारी नुकसान हुआ। इस खुलासे ने न्यायिक कार्यवाही को गति प्रदान की और दूरसंचार क्षेत्र में महत्वपूर्ण नीतिगत सुधारों को प्रेरित किया।
- ❖ कोयला ब्लॉक आवंटन: कोयला ब्लॉकों के आवंटन में अनियमितताओं पर सीएजी की रिपोर्ट ने न्यायपालिका और नीति निर्माताओं को कठोर कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप कोयला ब्लॉक आवंटन के लिए पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया को अपनाया गया।
- ❖ सामाजिक कार्यक्रमों की समीक्षा: सीएजी ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MNREGA), मध्याह्न भोजन योजना (mid-day meal) और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसे विभिन्न सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की गहन समीक्षा की है।

इन ऑडिट्स ने धन के दुरुपयोग के उदाहरणों की पहचान करने, कार्यक्रमों की दक्षता में सुधार करने और लाभार्थियों तक लाभ सुनिश्चित करने में मदद की है।

- ❖ रक्षा और रेलवे क्षेत्रों का ऑडिट: सीएजी ने रक्षा और रेलवे क्षेत्रों का व्यापक ऑडिट किया है, जिसमें अक्षमताओं और अनियमितताओं का खुलासा हुआ। इन ऑडिट्स ने इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संसाधन उपयोग में सुधार और परिचालन दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण नीतिगत सुधारों को प्रेरित किया है।
- ❖ सार्वजनिक उपक्रमों का प्रदर्शन मूल्यांकन: सीएजी की रिपोर्ट्स ने कई सार्वजनिक उपक्रमों में भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन के उदाहरणों को उजागर किया है, जिससे उनके प्रदर्शन और लाभप्रदता में सुधार के लिए प्रशासनिक सुधारों को प्रोत्साहित किया गया है।
- ❖ प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन: सीएजी ने जल संसाधनों और पर्यावरण संरक्षण सहित प्राकृतिक संसाधनों के कुशल प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया है। जल परियोजनाओं और वन संरक्षण कार्यक्रमों के गहन ऑडिट ने इन महत्वपूर्ण संसाधनों के सतत प्रबंधन में योगदान दिया है।
- ❖ स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र: सीएजी ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) और सर्व शिक्षा अभियान सहित विभिन्न स्वास्थ्य और शिक्षा कार्यक्रमों का गहन ऑडिट किया है। इन ऑडिट्स ने स्वास्थ्य सेवा वितरण और शैक्षिक अवसरों में महत्वपूर्ण अंतरालों की पहचान की है, जिससे सेवा वितरण में सुधार के लिए

नीतिगत हस्तक्षेपों को प्रोत्साहित किया गया है।

- ❖ डिजिटल इंडिया और आईटी पहल: सीएजी ने विभिन्न डिजिटल इंडिया और अन्य आईटी-संबंधित परियोजनाओं का ऑडिट किया है ताकि अनियमितताओं की पहचान की जा सके और डिजिटल क्षेत्र में सुधारों की सिफारिश की जा सके। इन ऑडिट्स ने ई-गवर्नेंस परियोजनाओं की प्रभावशीलता और दक्षता को बढ़ाने में योगदान दिया है।

सीएजी के कार्यों का प्रभाव:

सीएजी की निष्पक्षता और गहन विश्लेषण ने प्रशासनिक व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सीएजी की रिपोर्ट्स ने न केवल वित्तीय अनियमितताओं पर अंकुश लगाया है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को भी मजबूत किया है।

- बड़ी हुई पारदर्शिता: सीएजी की रिपोर्ट्स ने सरकारी कार्यों में अधिक पारदर्शिता ला दी है, जिससे वे जनता के लिए अधिक सुलभ हो गए हैं।
- नीतिगत सुधार: सीएजी की सिफारिशों ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तनों को प्रेरित किया है, जिससे शासन और दक्षता में सुधार हुआ है।
- जनता की भागीदारी: सीएजी की रिपोर्ट्स ने जनता को सरकारी गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान करके सशक्त बनाया है, जिससे उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेने में सक्षम बनाया गया है।
- वित्तीय अनुशासन: सीएजी ने सरकारी खर्च में वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, अपव्ययी खर्च पर अंकुश लगाया है और

सार्वजनिक संसाधनों के कुशल उपयोग को सुनिश्चित किया है।

चुनौतियाँ और सुधार की संभावनाएँ

सीएजी के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जैसे:

1. कार्यभार का विस्तार: केंद्र और राज्यों के सभी वित्तीय मामलों की निगरानी करना।
 2. संसाधनों की कमी: कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता।
 3. समय पर कार्रवाई: रिपोर्ट्स पर विलंबित कार्यवाही से इसका प्रभाव कम हो सकता है।
 4. तकनीकी उन्नति का अभाव: डिजिटल और तकनीकी साधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।
 5. मानव संसाधन की कमी: कुशल कर्मचारियों और विशेषज्ञों की कमी से कार्य की गति प्रभावित होती है।
- सीएजी को इन चुनौतियों से निपटने के लिए अपने संसाधनों को बढ़ाना होगा और नई तकनीकों को अपनाना होगा। इसके साथ ही, सरकार को सीएजी की रिपोर्ट्स पर त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिए।

निष्कर्ष

सीएजी भारतीय लोकतंत्र का अभिन्न हिस्सा है। यह न केवल वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है, बल्कि जनता के हितों की भी रक्षा करता है। आने वाले समय में, तकनीकी उन्नति और संसाधनों की वृद्धि से सीएजी की प्रभावशीलता और भी बढ़ाई जा सकती है। यह संस्था न केवल प्रशासनिक सुधारों में योगदान दे रही है, बल्कि भारत को एक अधिक उत्तरदायी और पारदर्शी शासन प्रणाली की ओर ले जा रही है। इसके कार्य न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।



सुश्री जे आर मैथिली
सुपुत्री राखी पी ओ
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वयं में खुश रहना : सच्ची पूर्ति का मार्ग

खुशी एक सार्वभौमिक खोज है, फिर भी कई व्यक्ति इसे अपने अंदर के बजाय बाहरी तौर पर तलाशते हैं। भावनात्मक संतुष्टि के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति से निराशा, अस्थिरता और स्वयं की भलाई पर नियंत्रण की कमी हो सकती है। हालाँकि, सच्ची खुशी आत्म-स्वीकृति, आत्म-प्रेम और संतुष्टि की आंतरिक भावना से उत्पन्न होती है। यह निबंध स्वयं में खुश रहने के महत्व, आत्मनिर्भरता के लाभों, इस स्थिति को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों और भीतर से वास्तविक खुशी पैदा करने की रणनीतियों की पड़ताल करता है।

दीर्घकालिक भावनात्मक स्थिरता और कल्याण के लिए अपने भीतर खुशी ढूँढना महत्वपूर्ण है। जब व्यक्ति खुशी के लिए बाहरी स्रोतों - जैसे रिश्ते, सामाजिक मान्यता या भौतिक संपत्ति पर निर्भर होते हैं, तो वे अपने नियंत्रण से परे परिस्थितियों के आधार पर खुद को निरंतर उतार-चढ़ाव के अधीन रखते हैं। बाहरी कारक अप्रत्याशित और अक्सर अस्थायी होते हैं, जो उन्हें खुशी के लिए अविश्वसनीय आधार बनाते हैं। इसके विपरीत, आंतरिक खुशी पैदा करने से कल्याण की एक स्थिर और स्थायी भावना मिलती है। जो लोग स्वयं से संतुष्ट हैं वे चुनौतियों का सामना करने में अधिक लचीलेपन का अनुभव करते हैं, क्योंकि उनकी खुशी दूसरों के कार्यों या विचारों पर निर्भर नहीं करती है। यह आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास

और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्तियों को उद्देश्य और पूर्ति की मजबूत भावना के साथ जीवन जीने की अनुमति मिलती है।

अपने भीतर खुशी प्राप्त करने से मनोवैज्ञानिक और सामाजिक रूप से कई लाभ मिलते हैं। सबसे पहले, आत्म-संतुष्टि भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ाती है, चिंता और तनाव को कम करती है। जो व्यक्ति खुशी के लिए खुद पर भरोसा करते हैं उनमें आत्म-मूल्य की भावना अधिक मजबूत होती है, जिससे वे बाहरी आलोचनाओं या असफलताओं के प्रति कम संवेदनशील हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त, आत्म-प्रसन्नता स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देती है। जब व्यक्ति स्वयं से संतुष्ट होते हैं तो वे रिश्तों को ज़रूरत की जगह बहुतायत की दृष्टि से देखते हैं। यह अस्वास्थ्यकर जुड़ाव और निर्भरता को रोकता है, जिससे अधिक सार्थक और संतुष्टिदायक कनेक्शन की अनुमति मिलती है। जो लोग अपने आप में खुश रहते हैं वे अपनी बातचीत में सकारात्मकता लाते हैं, जिससे वे अधिक आकर्षक जीवनसाथी, मित्र और सहकर्मी बन जाते हैं। इसके अलावा, आत्मनिर्भर तुष्टी व्यक्तिगत विकास को बढ़ाती है। जो लोग अपने भीतर खुशी पाते हैं, वे अपने जुनून का पता लगाने, व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने और हासिल करने और निर्णय या विफलता के डर के बिना जीवन के अनुभवों को अपनाने की अधिक संभावना रखते हैं।

यह स्व-संचालित प्रेरणा एक पूर्ण और उद्देश्य-संचालित जीवन में योगदान देती है।

इसके असंख्य लाभों के बावजूद, स्वयं के भीतर खुशी प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। समाज अक्सर व्यक्तियों को बाहरी स्रोतों से मान्यता प्राप्त करने के लिए मजबूर करता है, जिससे भावनात्मक संतुष्टि के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की आदत से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया इस विचार को कायम रखता है कि खुशी बाहरी उपलब्धियों, सामाजिक अनुमोदन या भौतिक सफलता से आती है, जिससे कई लोग अवास्तविक मानकों के विरुद्ध अपना मूल्य मापते हैं। इसके अतिरिक्त, पिछले अनुभव और बचपन की कंडीशनिंग निर्भरता पैटर्न को आकार देने में भूमिका निभा सकती है। जो लोग ऐसे वातावरण में पले-बढ़े हैं जहां उनका मूल्य बाहरी मान्यता पर आधारित था, उन्हें आंतरिक आत्म-मूल्य विकसित करने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है। इन गहरी जड़ें जमाए हुए विश्वासों पर काबू पाने के लिए सचेत प्रयास और आत्मचिंतन की आवश्यकता होती है।

एक और चुनौती अकेलेपन का डर है। कुछ व्यक्तियों का मानना है कि आत्मनिर्भरता अलगाव के बराबर है, जिससे वे किसी साथी को अपनाने के लिए अनिच्छुक हो जाते हैं। हालाँकि, अपने आप में खुश रहने का मतलब रिश्तों से बचना नहीं है, बल्कि, इसका अर्थ निर्भरता के बजाय पूर्णता के स्थान से उनमें संलग्न होना है। हालाँकि आत्म-प्रसन्नता की यात्रा चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन ऐसी कई रणनीतियाँ हैं जो व्यक्तियों को आंतरिक खुशी और संतुष्टि की मजबूत भावना पैदा करने में मदद कर सकती हैं। एक प्रभावी दृष्टिकोण आत्म-जागरूकता और आत्म-स्वीकृति का अभ्यास करना है। किसी की ताकत, कमजोरियों, मूल्यों और इच्छाओं को समझने के लिए समय निकालने से व्यक्ति खुद को पूरी तरह से गले लगा सकते हैं और अपनी विशिष्टता की सराहना कर सकते हैं। सकारात्मक मानसिकता विकसित करना एक और

आवश्यक कदम है। दैनिक कृतज्ञता प्रथाओं में संलग्न होना, व्यक्तिगत उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करना, और नकारात्मक आत्म-चर्चा को बदल कर सकारात्मक कथन को अपनाने से व्यक्ति की आंतरिक प्रसन्नता की स्थिति में काफी सुधार हो सकता है। इसके अतिरिक्त, शौक, व्यायाम और ध्यान जैसी खुशी देने वाली गतिविधियों में शामिल होने से बाहरी प्रभावों से स्वतंत्र पूर्णता की भावना विकसित करने में मदद मिलती है।

व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करना और जुनून का पीछा करना भी आत्म-खुशी में योगदान देता है। जब व्यक्ति सार्थक उद्देश्यों की दिशा में काम करते हैं, तो वे दूसरों से मान्यता प्राप्त करने के बजाय अपनी उपलब्धियों से उद्देश्य और संतुष्टि की भावना प्राप्त करते हैं। व्यक्तिगत मील के पत्थर हासिल करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और इस विचार को बल मिलता है कि खुशी एक स्व-संचालित खोज है।

अंत में, स्वयं के साथ एक स्वस्थ संबंध को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। अकेले में गुणवत्तापूर्ण समय बिताना, स्वः देख-रेख में संलग्न होना तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना, ये सभी आंतरिक शांति में योगदान करते हैं। एकांत का आनंद लेना और अपनी कंपनी में संतुष्टि पाना सीखना गहरी आत्म-संतुष्टि की ओर ले जाता है। स्वयं में खुश रहना स्थायी संतुष्टि और भावनात्मक स्थिरता की कुंजी है। जबकि खुशी के बाहरी स्रोत क्षणभंगुर हैं, आंतरिक खुशी एक सार्थक और समृद्ध जीवन के लिए ठोस आधार प्रदान करती है। आत्म-जागरूकता विकसित करके, सकारात्मक मानसिकता विकसित करके, व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करके और स्वः देख-रेख को अपनाकर, व्यक्ति खुशी की ऐसी स्थिति प्राप्त कर सकते हैं जो दूसरों पर निर्भर नहीं होती है। सच्ची खुशी भीतर से शुरू होती है, और एक बार प्राप्त होने पर, यह जीवन के सभी पहलुओं में फैल जाती है, रिश्तों को बढ़ाती है, व्यक्तिगत विकास और समग्र कल्याण करती है। आत्म-प्रसन्नता की यात्रा एक आजीवन प्रक्रिया है, लेकिन अधिक संतुष्ट और संपूर्ण जीवन के लिए इसकी शुरुआत करना उचित है।



श्रीमती सुशीला पी वी
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

प्राकृतिक संसाधन किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तीव्र आर्थिक विकास की चाह में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ा और इससे जलवायु परिवर्तन भी हुआ। जलवायु परिवर्तन का असर मौसम की चरम स्थितियों में देखा जा सकता है। प्रभाव इतना गंभीर हो गया कि यह सभी वैश्विक और बहुपक्षीय मंचों पर चर्चा का विषय बन गया।

मानव पर्यावरण पर पहला कदम 1970 में संयुक्त राष्ट्र (यू एन) सम्मेलन (स्टॉकहोम सम्मेलन) में लिया गया जब पहली बार आर्थिक विकास और पर्यावरणीय गिरावट के बीच संबंधों पर चर्चा की गई। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित ब्रंटलैंड आयोग ने 1987 में पर्यावरण और आर्थिक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ संबंध के विचार को व्यक्त किया, जिसके बाद 1992, 2002 (रियो+10) और 2012 (रियो+20) में रियो डी जनेरियो में पर्यावरण

लेखांकन और पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित किए। इसके बाद पर्यावरण-आर्थिक लेखांकन प्रणाली - सेंट्रल फ्रेमवर्क (एस ई ई ए-सी एफ) को जन्म दिया गया, जो नवीनतम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत ढांचा है जिसे प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (एन आर ए) की अवधारणा के रूप में भी जाना जाता है। "ब्रंटलैंड कमीशन" जिसने पहली बार (1987 में) विचार गढ़ा कि "सतत विकास से भावी पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता का समझौता किए बिना ही वर्तमान जरूरतों को पूरा करना है।"

संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का शीर्षक था, "हमारी दुनिया को बदलना; सतत विकास के लिए 2030 का एजेंडा" (25 सितंबर, 2016) जिसे 190 से अधिक देशों की मंजूरी मिली। लक्ष्य अगले पंद्रह वर्षों में मानवता और ग्रह के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कार्रवाई को प्रोत्साहित करना था। 2030 का एजेंडा रणनीतियों को विकसित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रस्ताव था जो संतुलित

और एकीकृत तरीके से सतत विकास के सभी आयामों को आगे बढ़ाने का आह्वान था। एजेंडा सतत विकास के पारंपरिक तीन आयामों (सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय) से परे 5 "पी" यानी पाँच स्तंभों पर आधारित है:

- लोग (People): गरीबी और भुखमरी को, उनके सभी रूपों और आयामों को समाप्त करना
- ग्रह (Planet): ग्रह को अवनति से बचाने के लिए
- समृद्धि (Prosperity): सुनिश्चित करें कि सभी मनुष्य समृद्ध और पूर्ण जीवन का आनंद ले सकें
- शांति (Peace): शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना जो भय और हिंसा से मुक्त हो
- साझेदारी (Partnership): सभी देशों, सभी हितधारकों और सभी लोगों की भागीदारी के साथ एक पुनर्जीवित वैश्विक साझेदारी के माध्यम से इस एजेंडा को लागू करने के लिए आवश्यक संसाधन जुटाएं।

2030 कार्यावली और उसके लक्ष्य सतत विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया था जैसे कि:

- "विकासशील" देशों तक सीमित न हो जैसे कि इसके पहले की सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एम डी जी) के मामले में था; मगर वैश्विक होना चाहिए।
- समानता और मानवाधिकारों के प्रति समान मूल्यों पर आधारित हो;
- स्थायी वित्तपोषण, वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार की निगरानी और मूल्यांकन जैसे दृष्टिकोणों पर निर्भर होना है;

- काम करने के नए तरीकों की आवश्यकता है, जिसमें कई हितधारकों द्वारा अंतराक्षेत्रीय कार्रवाई शामिल हो;

- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यू एच सी) की दिशा में स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत करना है।

हालाँकि, सतत विकास का लक्ष्य (एस डी जी) कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, फिर भी सरकारों से अपेक्षित है कि वे स्वामित्व लें और 17 लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय रूपरेखा स्थापित करें। लक्ष्यों को लागू करने में प्रगति की अनुवर्ती कार्रवाई और समीक्षा की प्राथमिक जिम्मेदारी देशों की है, जिसके लिए गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और समय पर डेटा संग्रह की आवश्यकता है। क्षेत्रीय अनुवर्ती और समीक्षा राष्ट्रीय स्तर के विश्लेषणों पर आधारित होगी और वैश्विक स्तर पर अनुवर्ती और समीक्षा में योगदान देगी।

सतत विकास लक्ष्य (एस डी जी) निम्नानुसार हैं:



लक्ष्य 1. कोई गरीबी नहीं (No poverty)

लक्ष्य 2. शून्य भूख (Zero hunger)

लक्ष्य 3. अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली (Good health and well-being)

लक्ष्य 4. गुणवत्ता की शिक्षा (Quality education)

लक्ष्य 5. लैंगिक समानता (Gender Equality)

लक्ष्य 6. स्वच्छ जल एवं स्वच्छता (Clean water and sanitation)

लक्ष्य 7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा (Affordable and clean energy)

लक्ष्य 8. अच्छा काम और आर्थिक विकास (Decent work and economic growth)

लक्ष्य 9. उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढाँचा (Industry, innovation and infrastructure)

लक्ष्य 10. टिकाऊ शहर और समुदाय (Sustainable cities and communities)

लक्ष्य 11. असमानता कम करना (Reduced inequality)

लक्ष्य 12. जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन (Responsible consumption and production)

लक्ष्य 13. जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई (Climate action)

लक्ष्य 14. पानी के नीचे जीवन (Life below water)

लक्ष्य 15. भूमि पर जीवन (Life on land)

लक्ष्य 16. शांति, न्याय और मजबूत संस्था (Peace, justice and strong institution)

लक्ष्य 17. लक्ष्यों के लिए साझेदारी (Partnership for the goals)

जलवायु परिवर्तन की वैश्विक प्रतिक्रिया पर बातचीत करने के लिए संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन जलवायु परिवर्तन (यूएनएफसीसीसी) को प्राथमिक अंतरराष्ट्रीय, अंतरसरकारी मंच मान लिया था। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने सरकारी लेखांकन और वित्तीय रिपोर्टिंग के साथ-साथ निर्णय लेने की गुणवत्ता तथा सार्वजनिक जवाबदेही को बढ़ाने के लिए सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (गसब) की स्थापना की। इसमें भारत सरकार के सभी लेखा सेवाओं, आर बी आई, आई सी ए आई जैसे नियामक प्राधिकरण और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक सुप्रीम ऑडिट संस्थानों के

अंतरराष्ट्रीय निकाय का सदस्य है, जो पर्यावरण अंतरराष्ट्रीय निकाय का भी सदस्य है- जिसे पर्यावरण ऑडिटिंग का कार्य समूह (डब्ल्यूजीईए) कहा जाता है। डब्ल्यू जी ई ए ने सुझाव दिया कि ऑडिट संस्थानों को प्राकृतिक संसाधन खातों को अपनाने के लिए अपने देश की सहायता करनी चाहिए।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन का महत्व है कि:

- पर्यावरणीय संसाधनों को गैर-नवीकरणीय क्षति की मात्रा निर्धारित करके वास्तविक रूप में विकास के निर्धारण में सहायता करेंगे।
- जलवायु परिवर्तन की निगरानी, माप और विश्लेषण के लिए परिसंपत्ति और प्रवाह खाते उपयोगी ढांचे होंगे।
- एसडीजी को पूरा करने के अलावा, यह भारत के परिसंपत्ति खाते बनाकर हमें विशिष्ट देशों के समूह का हिस्सा बनने में भी मदद करेगा।

सतत विकास लक्ष्य के 17 लक्ष्य आपस में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं और कोई भी पीछे न छूटे, इसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम 2030 एजेंडा की पूरी सीमा तक महत्वाकांक्षाओं को साकार करेंगे, तो सभी के जीवन में गहराई से सुधार होगा और हमारी दुनिया भावी पीढ़ी के जीने के लिए बेहतरीन जगह बन जाएगी।

जय हिंद, जय भारत !



सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री राखी पी ओ
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्य जीवन संतुलन – स्वस्थ और उत्पादक जीवन की कुंजी

आज की तेज़-तर्रार दुनिया में, समग्र कल्याण और उत्पादकता के लिए स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। कार्य-जीवन संतुलन पेशेवर जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन को संदर्भित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि व्यक्ति अपने कार्य दायित्वों को पूरा कर सकते हैं और साथ ही परिवार, अवकाश और स्वयं की देखभाल के लिए भी समय निकाल सकते हैं। आधुनिक कार्यबल की बढ़ती माँगें, तकनीकी प्रगति के साथ मिलकर, जो काम और घरेलू जीवन के बीच की सीमाओं को धुंधला कर देती हैं, एक स्थायी संतुलन खोजने को और भी महत्वपूर्ण बना देती हैं। यह निबंध कार्य-जीवन संतुलन के महत्व, इसके लाभों, चुनौतियों और इसे प्राप्त करने की रणनीतियों की पड़ताल करता है।

एक अच्छी तरह से बनाए रखा गया कार्य-जीवन संतुलन किसी व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान देता है। अधिक काम करने से तनाव, जलन और उत्पादकता कम हो सकती है, जो कर्मचारियों और नियोक्ताओं दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन कर्मचारियों के पास काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच अच्छा संतुलन है, वे अपनी नौकरी

से अधिक व्यस्त, प्रेरित और संतुष्ट हैं। इसके अतिरिक्त, एक संतुलित जीवन व्यक्तियों को रिश्तों को पोषित करने, शौक पूरा करने और आत्म-देखभाल में संलग्न होने की अनुमति देता है, जो सभी एक पूर्ण जीवन में योगदान करते हैं।

संगठनात्मक दृष्टिकोण से, कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देने वाली कंपनियां कम टर्नओवर दर, उच्च कर्मचारी मनोबल और बड़ी हुई दक्षता का अनुभव करती हैं। नियोक्ताओं को ऐसे कार्यबल से लाभ होता है जो अधिक केंद्रित, रचनात्मक होता है और तनाव-संबंधी बीमारियों के कारण अनुपस्थिति की संभावना कम होती है। इसके अलावा, कार्य-जीवन संतुलन को महत्व देने वाली संस्कृति को बढ़ावा देने से व्यवसायों को शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने और सकारात्मक कार्यस्थल प्रतिष्ठा बनाने में मदद मिलती है।

इसके महत्व के बावजूद, विभिन्न कारकों के कारण उचित कार्य-जीवन संतुलन हासिल करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। प्राथमिक बाधाओं में से एक कर्मचारियों पर बढ़ता कार्यभार और अपेक्षाएँ हैं। कई पेशेवर समय सीमा को पूरा करने के लिए लंबे समय तक काम करते हैं, जिससे थकावट होती है और निजी जीवन के लिए समय की कमी हो जाती है। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी में प्रगति, जैसे कि स्मार्टफोन और दूरस्थ कार्य, ने काम से अलग होना कठिन बना दिया है, जिससे सीमाएँ

निर्धारित करने की क्षमता और भी जटिल हो गई है।

एक और चुनौती यह सामाजिक अपेक्षा है कि सफलता को समग्र कल्याण के बजाय कैरियर की उपलब्धियों से मापा जाता है। कई व्यक्ति वित्तीय दबाव, नौकरी की सुरक्षा संबंधी चिंताओं या अपने करियर में आगे बढ़ने की इच्छा के कारण निजी जीवन से अधिक काम को प्राथमिकता देते हैं। इसके अलावा, कुछ उद्योग, जैसे स्वास्थ्य सेवा, वित्त और प्रौद्योगिकी (FinTech), लंबे समय और उच्च प्रदर्शन की मांग करते हैं, जिससे कर्मचारियों के लिए संतुलन बनाए रखना और भी कठिन हो जाता है।

हालाँकि कार्य-जीवन संतुलन चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन सचेत प्रयासों और रणनीतिक योजना के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है। एक प्रभावी दृष्टिकोण समय प्रबंधन है, जिसमें कार्यों को प्राथमिकता देना, यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना और विलंब से बचना शामिल है। कर्मचारियों को ऐसे कार्यक्रम बनाने चाहिए जो काम और व्यक्तिगत गतिविधियों दोनों के लिए पर्याप्त समय आवंटित करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि किसी भी पहलू की उपेक्षा न हो।

काम और निजी जीवन के बीच स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना एक और महत्वपूर्ण रणनीति है। इसमें निर्दिष्ट कार्य घंटे स्थापित करना और ईमेल की जाँच करने या उन घंटों के बाहर काम से संबंधित कॉल लेने से बचना शामिल है। नियोजक लचीली कार्य व्यवस्था को प्रोत्साहित करके इसका समर्थन कर सकते हैं, जैसे कि दूरस्थ कार्य विकल्प और संपीड़ित कार्य सप्ताह, जिससे कर्मचारियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अपने शेड्यूल को तैयार करने की अनुमति मिल सके।

आत्म-देखभाल भी कार्य-जीवन संतुलन का एक मूलभूत घटक है। व्यायाम, ध्यान और शौक जैसी गतिविधियों में संलग्न होने से तनाव को कम करने और समग्र कल्याण में सुधार करने में मदद मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, परिवार और दोस्तों के साथ मजबूत रिश्ते बनाए रखने से भावनात्मक समर्थन मिलता है और खुशी बढ़ती है।

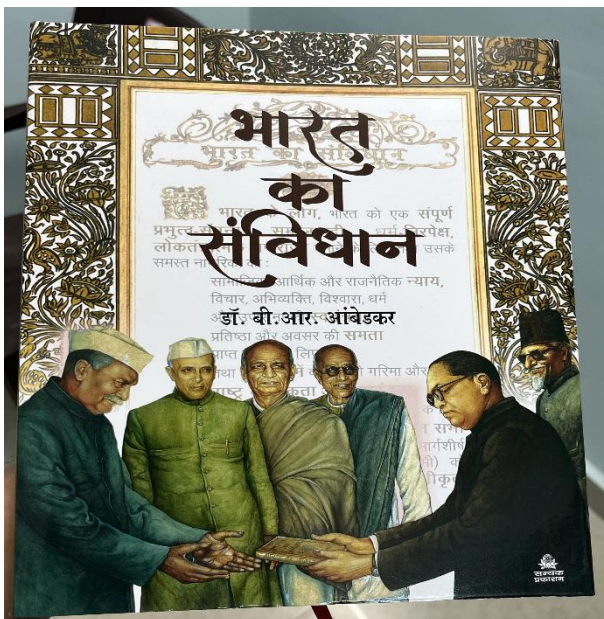
नियोजक सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति को बढ़ावा देकर कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संगठन ऐसी नीतियाँ लागू कर सकते हैं जो कर्मचारियों की भलाई का समर्थन करती हैं, जैसे सैवैतनिक अवकाश, कल्याण कार्यक्रम और मानसिक स्वास्थ्य संसाधनों की पेशकश। एक स्वस्थ कार्य वातावरण को प्रोत्साहित करना जहाँ कर्मचारी मूल्यवान और समर्थित महसूस करते हैं, अधिक उत्पादक और संलग्न कार्यबल की ओर ले जाते हैं।

समग्र कल्याण, उत्पादकता और नौकरी से संतुष्टि बनाए रखने के लिए कार्य-जीवन संतुलन हासिल करना आवश्यक है। जबकि बढ़े हुए कार्यभार और सामाजिक अपेक्षाओं जैसी चुनौतियाँ संतुलन को कठिन बना सकती हैं, प्रभावी समय प्रबंधन लागू करना, सीमाएँ निर्धारित करना और स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता देना व्यक्तियों को संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकता है। नियोजकों की भी जिम्मेदारी है कि वे सहायक कार्य वातावरण बनाएं जो संतुलन और कल्याण को बढ़ावा दें। अंततः, एक अच्छी तरह से संतुलित जीवन एक स्वस्थ, खुशहाल और अधिक सफल व्यक्ति की ओर ले जाता है, जिससे कर्मचारियों और संगठनों दोनों को समान रूप से लाभ होता है।



गणतंत्र दिवस

भारत का गणतंत्र दिवस हर वर्ष 26 जनवरी को देश भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई ने देश को एक नई दिशा दिखाई। 15 अगस्त 1947 को भारत ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन यह सिर्फ एक पहला कदम था। देश को एक मजबूत संविधान की आवश्यकता थी, जो उसके नागरिकों को अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करे। भारत का संविधान 26 नवंबर 1949 को अपनाया गया, लेकिन यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था। इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जब देश ने अपना संविधान अपनाया और एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया। यह दिन देश की स्वतंत्रता और लोकतंत्र की जीत का प्रतीक है।



यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारे देश के निर्माण में हमारे पूर्वजों और स्वतंत्रता सेनानियों का महत्वपूर्ण योगदान था। गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्र को संबोधित किया जाता है।

राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर मानीय राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित किया और देश के विभिन्न हिस्सों में झण्डा फहराने के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कार्यक्रम में देश के नागरिकों ने भाग लिया और देश के झंडे को सलामी दी। आदरणीय राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में देश के नागरिकों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दी। माननीय राष्ट्रपतिजी ने देश के विकास में योगदान देने और अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान करने के लिए भी आह्वान किया। देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए थे। इन कार्यक्रमों में देश की सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया गया था।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमें अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को याद रखना चाहिए। हमें अपने देश के विकास में योगदान देना चाहिए और अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए। हमें अपने देश के लिए नए संकल्प लेने चाहिए कि अपने देश को और अधिक मजबूत और समृद्ध बनाने और अपने देश के नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे।

हमारे देश का 76वां गणतंत्र दिवस, महालेखाकार (लेखा व हकदारी), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से 26 जनवरी 2025 को मनाया गया।



महालेखाकार सुश्री प्रीति अब्रहाम द्वारा सम्मान गारद के निरीक्षण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ और उनके द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, तदुपरांत मनोरंजन क्लब द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया। लेखा एवं हकदारी कार्यालय के उप महालेखाकार / प्रशासन श्री बाषा

मोहम्मद बी के स्वागत भाषण के साथ सार्वजनिक सभा की शुरुआत हुई। सुश्री प्रीति अब्रहाम, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तथा श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) द्वारा गणतंत्र दिवस संदेश दिया गया।



अपने गणतंत्र दिवस संदेश में महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ने कहा कि 'हम अपने मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ संविधान का जश्र मना रहें हैं जो सैकड़ों भाषाओं, परंपराओं और संस्कृतियों वाले विविधता से भरे हमारे देश को एक कानूनी ढांचे की एकता के तहत लाया है। 26 जनवरी को हम संप्रभु समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतंत्र के रूप में इस महान राष्ट्र के सफर का जशन मना रहे हैं और और यह पवित्र दिन डॉ बी आर अंबेडकर और संविधान सभा के अन्य सदस्यों के प्रयासों को भी याद दिलाता है जिन्होंने एक ऐसा संविधान तैयार करने का अथक प्रयास किया जो प्रत्येक भारतीय नागरिक को न्याय, स्वाधीनता और समानता की गारंटी देता है। हमारा संविधान इस देश का सर्वोच्च कानून है और वह हमारी जनता के मूल्यों तथा आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। वह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नागरिक के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार किया जाता है और वह शासन के लिए एक ऐसा ढांचा प्रदान करता है जोकि पारदर्शी और जवाबदेही है। महालेखाकार महोदय ने जोर दिया कि भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग से जुड़े हम सभी के लिए भी

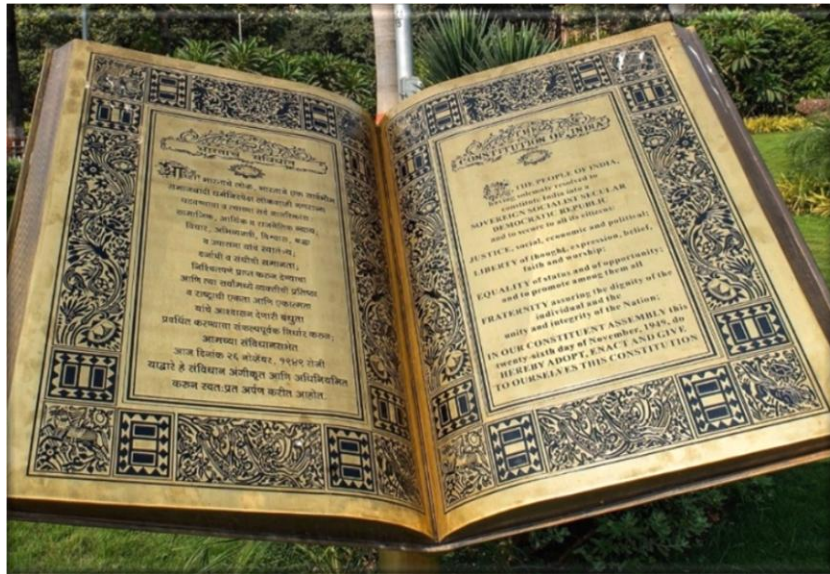
यह एक विशेष अवसर है। जबकि भारतीय संविधान की मर्यादा बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग से जुड़े हमारे लिए यह हमारा पूरा पेशा है और कार्य विवरण भी। हमारे पास सार्वजनिक वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित करने का संवैधानिक अधिदेश है। हमारे कार्य से सरकार का नियामक ढांचा और वितरण तंत्र प्रभावित होता है। देश की प्रगति की दिशा तय करने में हम निर्णायक थे, निर्णायक हैं और निर्णायक रहेंगे। संसद एवं विधानमण्डलों की लोक लेखा समितियों के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के तौर पर हमारी भूमिका हमें वित्तीय प्रशासन के क्षेत्र में संवैधानिक कानूनों को बनाए रखने के लिए उत्तरदायी बनाते हैं। डॉ बी आर अंबेडकर ने संविधान सभा में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक संस्था के विशिष्ट महत्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा था 'मेरे विचार में यह गणमान्य व्यक्ति या अधिकारी संभवतः भारत के संविधान में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जो यह देखेगा कि संसद द्वारा स्वीकृत खर्च संसद द्वारा निर्धारित किए गए खर्चों से अधिक या भिन्न तो नहीं हैं'। हम उच्च गुणतापूर्ण लेखापरीक्षण तथा लेखांकन के माध्यम से जवाबदेही, पारदर्शिता तथा सुशासन को बढ़ावा देते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि सार्वजनिक निधियों का उपयोग दक्षतापूर्वक और अभिप्रेत प्रयोजनों के लिए किया जा रहा है।



उन्होंने एक बार फिर डॉ अंबेडकर को उद्धृत करते हुए, 'संविधान चाहे जितना अच्छा हो, वह बुरा साबित हो सकता है, यदि उसका अनुसरण करने वाले लोग बुरे हों। एक संविधान चाहे जितना बुरा हो, वह अच्छा साबित हो सकता है, यदि उसका पालन करने वाले लोग अच्छे हों।' आह्वान किया कि, गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर अपने राष्ट्र की सेवा के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करने और निष्पादन, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा, विश्वस्तता, वृत्तीय उत्कृष्टता, पारदर्शिता और सकारात्मक दृष्टिकोण के अपने मूल मूल्यों को बनाए रखने का प्रण लें।



तत् पश्चात मनोरंजन क्लब द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए। तीनों कार्यालयों के चुनिंदा अधिकारियों / पदाधिकारियों को उनके द्वारा वर्ष 2024 के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्य का सम्मान करते हुए नकद पुरस्कार एवं श्रेष्ठता प्रमाण पत्र वितरित किए गए। श्री मोहम्मद डानिश उप महालेखाकार, प्रशासन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ गणतंत्र दिवस समारोह 2025 सम्पन्न हुआ।



ऑडिट दिवस, 2024

भारत का सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (SAI) भारत के सबसे पुराने संस्थानों में से एक है। इसकी शुरुआत वर्ष 1858 में हुई थी, जब महालेखाकार के नेतृत्व में एक अलग विभाग की स्थापना की गई थी और उसे ईस्ट इंडिया कंपनी के तहत वित्तीय लेनदेन के लेखांकन और लेखापरीक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। भारत का प्रशासन संभालने के बाद, ब्रिटिश क्राउन ने भारत सरकार अधिनियम, 1858 पारित किया। इस अधिनियम ने सन् 1860 में शाही आय और व्यय के वार्षिक बजट की एक प्रणाली शुरू की, जिसने शाही लेखापरीक्षा की आधारशिला रखी। सर एडवर्ड ड्रमंड ने 16 नवंबर 1860 को पहले महालेखापरीक्षक के रूप में कार्यभार संभाला।

सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने के बाद, सन् 1950 में भारत के संविधान को अपनाने के साथ ही भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक को एक संवैधानिक प्राधिकरण के रूप में स्थापित किया गया था। सन् 1947 के बाद भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की भूमिका ब्रिटिश भारत और स्वतंत्र भारत में कानूनों और प्रथाओं के

माध्यम से विकसित हुई। हम इस इतिहास को चिह्नित करने के लिए 16 नवंबर को 'ऑडिट दिवस' के रूप में मनाते हैं।

चौथा ऑडिट दिवस 16 नवंबर 2024 को नई दिल्ली स्थित भारत के नि.मलेप कार्यालय के परिसर में मनाया गया और लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम में भारत में वित्तीय निगरानी सुनिश्चित करने और सुशासन को बढ़ावा देने में संस्था के योगदान के 164 वर्ष पूरे होने का स्मरण किया गया।

अध्यक्ष ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक और संपूर्ण लेखापरीक्षा समुदाय को शासन में जवाबदेही और पारदर्शिता को मजबूत करने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई दी और नि.मलेप की समृद्ध विरासत की सराहना की तथा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान के रूप में इसके विकास पर प्रकाश डाला जो अपनी विशिष्टता और विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है। अध्यक्ष ने इस बात पर जोर दिया



कि पिछले कुछ वर्षों में लेखापरीक्षा में बदलाव आया है और यह वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और शासन को बेहतर बनाने में एक मार्गदर्शक शक्ति बन गई है। उन्होंने स्थानीय शासन और सामाजिक कार्यक्रमों की लेखापरीक्षा करके सार्वजनिक निधियों के उपयोग का मूल्यांकन करने और सामाजिक-आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में नि.मलेप की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया। नि.मलेप के वैश्विक कद को स्वीकार करते हुए, अध्यक्ष ने एसओएसएआई (2024-27) की अध्यक्षता संभालने और 16^{वीं} एसओएसएआई सभा की सफल मेजबानी करने के लिए संस्था को बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारत की लेखापरीक्षा प्रथाएँ दुनिया भर में एक मानक बन गई हैं और इसका अध्ययन करने और उन्हें अपनाने के लिए 50 से अधिक देशों के सार्वजनिक अधिकारियों और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों के दौरे हुए हैं। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहित उभरती हुई तकनीकों को सक्रिय रूप से अपनाने के लिए नि.मलेप की प्रशंसा की, जिसने इसकी लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं को मजबूत किया है और पारदर्शिता को बढ़ाया है। अध्यक्ष ने तत्कालीन नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू के प्रति आभार व्यक्त किया और पिछले नि.मलेप, लेखापरीक्षा अधिकारियों और कर्मचारियों के योगदान को स्वीकार किया जिन्होंने इस संस्थान को अद्वितीय बनाया है। उन्होंने राष्ट्र को सुशासन और विकसित भारत की ओर ले जाने में उनके निरंतर प्रयासों के महत्व को रेखांकित किया।

इस कार्यक्रम में भारत के नि.मलेप श्री गिरीश चंद्र मुर्मू, नि.मलेप मुख्यालय और भारत के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के प्रधान महालेखाकार/ महानिदेशक/ महालेखाकार/ प्रधान निदेशक, दिल्ली में तैनात वरिष्ठ अधिकारी और नि.मलेप के लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्यों और विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों सहित आमंत्रित गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

लेखापरीक्षा दिवस 2024 के लिए कई गतिविधियों का आयोजन किया गया था, जिसकी

शुरुआत 11 और 13 नवंबर 2024 को पूर्ववर्ती कार्यक्रमों से हुई, जिसमें नि.मलेप कार्यालय में विभिन्न कार्यात्मक शाखाओं द्वारा तैयार किए गए नए मूल्यवर्धित उत्पाद नि.मलेप द्वारा प्रकाशित किए गए। 16 नवंबर 2024 को मुख्य समारोह के अलावा कई अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए थे। दिल्ली एनसीआर में स्थित कॉलेजों के छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का अंतिम दौर आयोजित किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ-साथ राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए गए, जो पहले 4 अक्टूबर 2024 को पूरे भारत के कॉलेज के छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। उस दिन 2022 के आई ए एण्ड ए एस अधिकारी प्रशिक्षु बैच का समापन समारोह और सार्वजनिक लेखापरीक्षा और लेखांकन में नवाचार और उत्कृष्टता के लिए नि.मलेप के पुरस्कार वितरित किए गए।

इन गतिविधियों के अलावा, लेखापरीक्षा दिवस के तुरंत बाद के सप्ताह के दौरान देश भर के क्षेत्रीय कार्यालयों में लेखापरीक्षा सप्ताह भी मनाया गया, जिसका उद्देश्य हितधारकों और बड़े पैमाने पर समाज तक पहुंच का विस्तार करना और अच्छे सार्वजनिक प्रशासन के लिए योगदान प्रदर्शित करना था।

केरल में सभी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से ऑडिट सप्ताह 2024 मनाया। समारोह की शुरुआत दि.04/10/2024 को नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता 2024 के साथ हुई। महालेखाकार का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम उपरोक्त प्रतियोगिता के केंद्रों में से एक था। यह प्रतियोगिता उन सभी कॉलेज के छात्रों के लिए खुली थी जो वर्तमान में भारत में किसी भी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी संस्थान में अध्ययन के पाठ्यक्रम में नामांकित हैं और उनकी आयु 23 वर्ष से अधिक नहीं है। प्रतियोगिता में कुल 36 छात्रों ने भाग लिया था।

‘क्यूरियस 2024’ झलकियां



विजेताओं को लेखापरीक्षा दिवस, यानी 16 नवंबर 2024 के दौरान नकद पुरस्कार दिए गए।

दि.14/11/2024 को राजगिरी बिजनेस स्कूल, कोच्चि, काक्कनाड में एक आउटरीच गतिविधि के रूप में एक अखिल केरल इंटरकॉलेजिएट प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता ‘क्यूरियस 2024’ आयोजित की गई। इस प्रश्नोत्तरी का आयोजन केरल की पहली प्रोफेशनल किज़िंग एंटीटी मेसर्स फैक्ट्री द्वारा किया गया था जो केरल सरकार के विभागों/स्वायत्त निकायों, बैंकों आदि के लिए विभिन्न प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित करती है। व्यापक रूप से ‘केरल के किज़ मैने’ के रूप में जाने जाने वाले श्री स्नेहाज श्रीनिवास किज़ मास्टर थे। इस कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न कॉलेजों की 50 से अधिक टीमों ने भाग लिया।





कार्यशाला



इसके अतिरिक्त, दि.18/11/2024 से दि. 20/11/2024 तक मुख्य कार्यालय में कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। लेखापरीक्षा स्टाफ के लिए विषय थे 'केरल में पर्यावरण की अवस्था - स्थिति, चुनौतियां और आगे बढ़ना, केरल में बाढ़ के लिए तैयारी और प्रतिक्रिया और आईटी सिस्टम की लेखापरीक्षा' तथा ले व ह के लिए विषय था 'आईटी सिस्टम की साइबर स्वच्छता और सुरक्षा'। उपरोक्त के अलावा, मुख्य कार्यालय और शाखाओं में विभिन्न प्रतियोगिताएं, जैसे, अंतर-कार्यालय वाद-विवाद, रंगोली प्रतियोगिता, डब शरैड्स, एक मिनट बातचीत और कर्मचारियों के लिए फोटोग्राफी प्रतियोगिता तथा उनके बच्चों के लिए पेंटिंग और भाषण प्रतियोगिता की व्यवस्था की गई थी।

अंतर-कार्यालय वाद-विवाद व डब शरैड्स



बच्चों के लिए चित्र रचना प्रतियोगिता



स्वागत भाषण: वरिष्ठ उप महालेखाकार



ऑडिट सप्ताह 2024 का समापन समारोह 22 नवंबर 2024 को सुबह 10 बजे तिरुवनंतपुरम स्थित मुख्य कार्यालय में आयोजित किया गया और सुश्री शारदा मुरलीधरन, आईएएस, मुख्य सचिव, केरल सरकार मुख्य अतिथि थीं। मुख्य अतिथि सहित सभा में उपस्थित अधिकारी/पदाधिकारीगण का स्वागत करते हुए डॉ.अनीष डी, आई ए ए एस, वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा सभा का शुभारंभ किया। सुश्री अतूर्वा सिन्हा, आई ए ए एस, महालेखाकार (ले व ह) और सुश्री प्रीति अब्राहम, आई ए ए एस महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने दर्शकों को संबोधित किया। मुख्य सचिव तथा महालेखाकारों द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। माननीय महालेखाकार, सुश्री प्रीति अब्राहम, आई ए ए एस ने ऑडिट दिवस के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) के सर्वोच्च निष्पादनार्थ नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक से प्राप्त 'Office of the year' शील्ड लेखापरीक्षा-I के अधिकारियों के साथ साझा किया। तदुपरांत, श्री बाषा मोहम्मद आई ए ए एस, उप महालेखाकार द्वारा ऑडिट सप्ताह के सफल आयोजन से जुड़े पदाधिकारीगण का आभार व्यक्त किया।

महालेखाकारों के साथ मुख्य अतिथि



मुख्य अतिथि द्वारा संबोधन



कार्यक्रम का समापन कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम (वाद्य वादन, संगीत) के साथ संपन्न हुआ।



नि.मलेष से शीलड प्राप्त करते हुए
महालेखाकार

अधिकारियों के साथ शीलड साझा करते हुए महालेखाकार



सांस्कृतिक कार्यक्रम झलकियां



चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग ने हिंदी के राजभाषा बनने के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 14-15 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में चौथा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने शनिवार, 14 सितंबर को नई दिल्ली में राजभाषा हीरक जयंती समारोह एवं चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया।



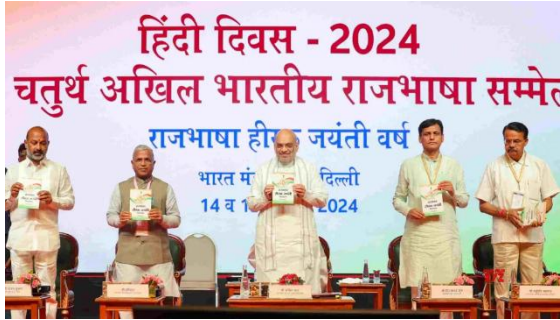
गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा तथा केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के कुशल मार्गदर्शन में वर्ष 2021 से प्रतिवर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री ने वर्ष 2019 में देश के विभिन्न शहरों में बड़े पैमाने पर हिंदी दिवस के आयोजन की संकल्पना की थी। इस संकल्पना को साकार करते हुए वर्ष 2021 में वाराणसी में हिंदी दिवस तथा पहला अखिल भारतीय राजभाषा

सम्मेलन आयोजित किया गया। उसके बाद वर्ष 2022 में सूरत तथा वर्ष 2023 में पुणे में हिंदी दिवस तथा दूसरा एवं तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। इन आयोजनों ने देश भर के राजभाषा कार्मिकों एवं अधिकारियों में नई ऊर्जा का संचार किया है। राज्य सभा के उपसभापति श्री हरिवंश, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय और श्री बंदी संजय कुमार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब और समिति के अन्य सदस्य, भारत सरकार के सचिव, विभिन्न बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दक्षिण भारत के दो हिंदी विद्वान प्रो. एस. तंकमणि अम्मा, केरल विश्वविद्यालय और प्रो. एस आर सराजू और हिंदी जगत के दो प्रख्यात विद्वान, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित और डॉ. हरिओम पंवार भी उद्घाटन सत्र में उपस्थित थे। दो दिवसीय सम्मेलन में 10,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया था, जिसमें देश भर के राजभाषा अधिकारियों के साथ-साथ हिंदी विद्वान और भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल थे।

राष्ट्रीय राजधानी में हिंदी दिवस समारोह और चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन इस मायने में भी खास है कि राजभाषा विभाग इस अवसर को हीरक जयंती के रूप में मना रहा है। हिंदी के राजभाषा बनने की 75 साल की यात्रा ने न केवल कई महत्वपूर्ण पड़ाव पार किए हैं बल्कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति की है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर पत्रिका 'राजभाषा भारती के विशेषांक का विमोचन किया। माननीय श्री अमित शाह जी ने हीरक जयंती को यादगार बनाने के लिए एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया।

गृह मंत्री ने इस अवसर पर राजभाषा गौरव और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्रदान किए। इसके साथ ही कुछ और पुस्तकों और पत्रिकाओं का विमोचन भी किया गया।



‘राजभाषा भारती’ के विशेषांक का प्रकाशन



डाक टिकट



सिक्का



भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ

इस सुअवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री ने भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लगातार हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास तथा उनके बीच बेहतर समन्वय पर जोर देते रहे हैं। संविधान की मंशा और प्रधानमंत्री के निदेश को ध्यान में रखते हुए हिंदी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा उनके बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। दो दिवसीय चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में पिछले 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति पर गहन चर्चा हुई। सम्मेलन के पहले दिन 14 सितंबर को उद्घाटन सत्र के पश्चात 'राजभाषा हीरक जयंती - 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति' पर चर्चा हुई। जबकि दूसरा सत्र 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी' पर था, जिसे लोकप्रिय हिंदी कवि और वक्ता डॉ. कुमार विश्वास ने संबोधित किया।

15 सितंबर को सम्मेलन के तीसरे सत्र में देश के प्रसिद्ध भाषाविदों और कोशकारों ने 'भाषा शिक्षण में शब्दकोष की भूमिका और देवनागरी लिपि की विशेषता' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। चौथा सत्र 'तकनीकी युग में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में नगर राजभाषा समिति का योगदान' विषय पर था। पांचवां सत्र 'भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023: एक चर्चा' पर था, जिसे केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने संबोधित किया। अंतिम सत्र 'भारतीय सिनेमा, हिंदी भाषा के विकास का सशक्त माध्यम' पर था, जिसे प्रसिद्ध अभिनेता श्री अनुपम खेर और सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता एवं निर्देशक श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने संबोधित किया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024

राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के भारत मण्डप में आयोजित हिंदी दिवस एवं पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के पश्चात् महालेखाकार (लेखा व हकदारी), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) केरल के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के संयुक्त तत्वावधान में 27.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024 समुचित रूप से आयोजित किया गया। पखवाड़े की शुरुआत प्रधान महालेखाकार के निदेशानुसार 17 सितम्बर 2024 को कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा हिंदी दिवस का पालन सुनिश्चित करने हेतु राजभाषा प्रतिज्ञा के साथ हुई।

दि.18.09.2024 पूर्वाह्न 10.30 बजे प्रतियोगिताएं आरंभ हुई जिनका संचालन श्रीमती के आर रोहिणी, सहायक निदेशक, श्रीमती आशा जे आर, सहायक निदेशक तथा श्रीमती ए एम भद्रांबिका, सहायक निदेशक द्वारा किया गया। साथ में तीनों कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारी भी मौजूद रहे। प्रतियोगिताओं की शुरुआत निबंध लेखन के साथ हुई। संयुक्त पखवाड़ा आयोजन समिति के संयोजक, श्री बाषा मोहम्मद बी, उप महालेखाकार/ प्रशासन द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए विषयों का चयन किया गया था। 18.09.2024 से लेकर दि. 23.09.2024 तक तीनों कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न 12 प्रतियोगिताएं चलाई गयीं। निबंध लेखन के अलावा टिप्पण एवं आलेखन, प्रशासनिक हिंदी, अंग्रेजी से हिंदी में और विलोमतः अनुवाद, कथा रचना, कविता रचना, कविता पाठ, सुलेखन, आशुभाषण, प्रश्नोत्तरी, वर्णानुक्रम और पोस्टर डिज़ाईनिंग शामिल हैं। हिंदी पखवाड़े से संबंधित सभी

प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/ कर्मचारियों ने बड़ चढ़कर हिस्सा लिया।

दि. 24.09.2024 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से 12.30 बजे तक अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्री मनोज कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), एलपीएससी, वलियम्बला के कार्यालय द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।



27 सितंबर को शाम 04.00 बजे सुश्री अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह की शुरुआत ईश्वर वंदना के साथ हुई। सुश्री षेबा पी एच, उप महालेखाकार के स्वागत भाषण के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत, हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारत मंडप, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में आदरणीय गृह मंत्री द्वारा देश को संबोधित करते हुए संदेश सहित प्रथम दिन की झलकियां सभा के समक्ष https://drive.google.com/file/d/1CFA-tyK7q7XlD5QpCxEyJk766J_M1-Rg/view?usp=drivelink प्रस्तुत की गई। तदुपरांत महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी पखवाड़े के सफल संचालन के लिए बधाई दी।



स्वागत भाषण - उप महालेखाकार



अध्यक्षीय भाषण - महालेखाकार



महालेखाकार महोदया से रोलिंग ट्रॉफी स्वीकार करते हुए श्री जयचंद्रन वी एस, वरि.लेप.अधिकारी तथा श्री दीपु के वी, स.लेप.अधिकारी ।



महालेखाकार महोदया से प्रोत्साहन योजना हेतु प्रमाणपत्र स्वीकार करते हुए श्री निपिन प्रकाश

श्रीमती के आर रोहिणी, सहायक निदेशक द्वारा हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की गई। महालेखाकार ने वर्ष 2023-24 हेतु हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत (लेप-II) कार्यालय के श्री निपिन प्रकाश को प्रमाणपत्र और (लेप-II) कार्यालय के आई टी एस अनुभाग को रोलिंग ट्रॉफी श्री जयचंद्रन वी एस, वरि.लेप.अधिकारी तथा श्री दीपु के वी, स.लेप.अधिकारी को प्रदान कीं। महालेखाकार महोदया द्वारा (लेप-I) कार्यालय के पदाधिकारियों को भी प्रमाणपत्र वितरित किया गया। तत्पश्चात महालेखाकार एवं उप महालेखाकारों द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के तत्कालीन संयोजक श्री डानिष मोहम्मद, उप महालेखाकार द्वारा हिंदी पखवाड़ा 2024 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी अनुभागों व पदाधिकारियों को धन्यवाद अर्पित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत राष्ट्रगान के साथ सभा समाप्त हुई।



धन्यवाद ज्ञापन- उप महालेखाकार

पखवाडा समारोह: पुरस्कार विजेता



हार्दिक अभिनंदन

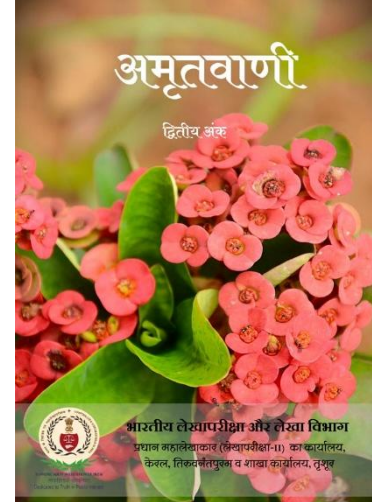
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग फुटबॉल टूर्नामेंट लगातार सातवीं बार विजेता.....।



हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक का प्रकाशन

महालेखाकार ने अक्तूबर 2024 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संयुक्त अर्धवार्षिक हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक का लोकार्पण किया। समिति के समक्ष पत्रिका का ई-रूपांतरण प्रस्तुत किया गया।

<https://cag.gov.in/uploads/media/Amritvani-II-final-067318c295156a5-37550588.pdf>





महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के प्राध्यम से प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है अपितु सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती हैं। पत्रिका में समाहित कुछेक रचनाएँ यथा, "अमावास में पूर्णिमा (सुश्री बिंदू के एन)", "जीवन के चरण दो शताब्दियों में (श्रीमती सुशीला पी वी)", एवं "सही-गलत (श्री अनुराग शुक्ला)" विशिष्टतः उल्लेखनीय हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
हस्ता/-

वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार
(ले व ह), पटना, बिहार

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (ले व हक), पंजाब,
चंडीगढ़

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "अमृतवाणी" का द्वितीय संस्करण प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है तथा राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है। पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (ले व हक), उत्तराखंड,
देहरादून

महोदय/ महोदया,

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। कार्यालय में आयोजित हुई गतिविधियों/ कार्यक्रमों की झलकियाँ भी मनमोहक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,
हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं, विशेष तौर पर 'एक पैगाम पेड़ों के नाम, जीवन की सुरमयी राहें, जिंदगी मेरी है, सही-गलत, जीवन के चरण दो शताब्दियों में' आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), भोपाल

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की प्रति की प्राप्ति हुई है। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है। "अमृतवाणी" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
राजस्थान, जयपुर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, संघर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री निपिन प्रकाश, लेखापरीक्षक की "भारत की स्वतंत्रता हमारी शान, सुश्री नीतु एम डी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की "वायनाड में भूस्खलन आपदा एवं श्री वीरेश सिंह, लेखापरीक्षक की "ई-ऑफिस" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
संपादक एवं हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य, नई दिल्ली

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका अति मनोरम व आकर्षक है। पत्रिका में सुश्री पी एच पेबा की कविता 'एक पैगाम पेड़ों के नाम' में पर्यावरण एवं जीवन का अत्यंत मार्मिक वर्णन है। पत्रिका में समाहित मुख्यतः श्री गोपेश कुमार का लेख 'मैं भारत हूँ', श्री अनुराग शुक्ला की रचना 'सही-गलत' अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। संक्षेप में कहे तो संपूर्ण पत्रिका उत्कृष्ट है। पत्रिका के कुशल संपादन व प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
दक्षिण रेलवे, चेन्नै

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दि.12.11.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री जे आर मालविका का "मैनिफेस्टेशन की शक्ति: अवचेतन मन को अनलॉक करना", सुश्री जे आर मैथिली का "सकारात्मक पालन-पोषण" एवं सुश्री रेखा बी जोसफ का "कन्याकुमारी यात्रा: एक अद्वितीय अनुभव" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीमती उषा बर्टी की "पतंग की आशा", सुश्री ए एन देविका की "जिंदगी मेरी है" एवं श्री निपिन प्रकाश की "भारत की स्वतंत्रता हमारी शान" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' का द्वितीय अंक प्राप्त हुआ है। इसके लिए सादर धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है और इसमें प्रकाशित रचनाएँ भी उत्कृष्ट हैं। विशेषकर एक पैगाम पेड़ों के नाम, पतंग की आशा, जिंदगी मेरी है और मैं भारत हूँ, प्रशंसनीय है। पत्रिका में सम्मिलित गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका प्रकाशन की पहल करने पर आपको बहुत बहुत बधाईयाँ एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चेन्नै, शाखा कार्यालय कोच्चि

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु सादर धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ के साथ समाहित छाया चित्र आकर्षक एवं विषय अनुकूल है। रचनाकारों द्वारा लिखित रचनाएँ या लेख विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं जो पत्रिका के प्रकाशन को सार्थक बनाती हैं।

पत्रिका में विशेष रूप से श्रीमती उषा बर्टी की 'पतंग की आशा', सुश्री देविका ए एन की 'जिंदगी मेरी है', श्री अनुराग शुक्ला का 'सही-गलत', श्री विनय विनोद का 'मेरे प्यारे पगु' एवं सुश्री बिंदु के एन की 'अमावास में पूर्णिमा' उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय रचनाएँ हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित 'अमृतवाणी' पत्रिका परिवार को सफल प्रकाशन हेतु आत्मिक बधाई प्रेषित है। यह पत्र उप महालेखाकार महोदय के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,

हस्ता/-

हिन्दी अधिकारी,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(ले व ह),
छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "अमृतवाणी" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय और रुचिकर हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया

गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर श्री अनुराग शुका की "सही-गलत", श्री गोपेश कुमार की "मैं भारत हूँ" एवं श्रीमती उषा बेटी की "पतंग की आशा" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के ई-संस्करण के द्वितीय अंक की पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका (अमृतवाणी) की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !
भवदीय,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, अगरतला

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय

के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद। श्रीमती उषा बेटी द्वारा रचित कविता 'पतंग की आशा', श्री गोपेश कुमार द्वारा रचित कविता 'जीवन की सुरमयी राहें' एवं श्री गोपेश कुमार द्वारा रचित लेख 'मैं भारत हूँ' सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्यप्रदेश, ग्वालियर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्राप्त ई-मेल, दि. 11.11.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "अमृतवाणी" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "अमृतवाणी" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री गोपेश कुमार की रचना 'जीवन की सुरमयी राहें', श्री अनुराग शुक्ला की रचना 'सही-गलत', सुश्री बिंदू के एन की रचना 'अमावास में पूर्णिमा' इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी यो हैं जिंदगी की सुरमयी राहें, पतंग की आशा, जिंदगी मेरी है, मेरे प्यारे पगु, मैं भारत हूँ तथा अमावास में पूर्णिमा आदि। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी यो हैं जिंदगी की सुरमयी राहें, पतंग की आशा, जिंदगी मेरी है, मेरे प्यारे पगु, मैं भारत हूँ तथा अमावास में पूर्णिमा आदि। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका “अमृतवाणी” के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं। पत्रिका की सजावट अति सुंदर एवं मनमोहक है। विभिन्न कार्यालय गतिविधियों एवं विशेष अवसरों के छायाचित्र भी बहुत ही आकर्षक है। सभी रचनाकारों एवं पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए संपूर्ण संपादक मंडल को इस कार्यालय की ओर से हार्दिक बधाइयां। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु व पुदुचेरी

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका “अमृतवाणी” के द्वितीय अंक की एक ई प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं प्रशंसनीय व पठनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।

भवदीया,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चंडीगढ़

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “अमृतवाणी” के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएं उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

1. सुश्री पी एच षेबा, उमले एक पैगाम पेड़ों के नाम
2. श्री गोपेश कुमार, स.लेप.अ. जीवन की

सुरमयी राहें

3. सुश्री बिंदु के एन, पर्यवेक्षक अमावस में पूर्णिमा
4. सुश्री नीनू एम डी, व.लेप., वायनाड में भूस्खलन

आपदा

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(उप महालेखाकार / प्रशा. के अनुमोदन से जारी)
भवदीया,
हस्ता/-
प्रभारी हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
महाराष्ट्र, नागपूर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित ई-पत्रिका “अमृतवाणी” के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय हैं।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं “एक पैगाम पेड़ों के नाम”, “भारत की स्वतंत्रता हमारी शान” एवं “स्त्रियों की सुरक्षा” ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनाएं अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक

मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका अमृतवाणी के द्वितीय अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री गोपेश कुमार का लेख "जीवन की सुरमयी राहें", श्री निपिन प्रकाश का लेख "भारत की स्वतंत्रता हमारी शान", श्री अनुराग शुक्ला का लेख "सही-गलत", सुश्री भद्रा आर का लेख "स्त्रियों की सुरक्षा" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हस्ता/-

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा –
वाणिज्यिक, बेंगलूरु

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के द्वितीय अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर अच्छा है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। रचनाएँ 'पतंग की आशा', 'जिंदगी मेरी है', 'मैं भारत हूँ', 'सकारात्मक पालन पोषण' एवं 'वायनाड में भूस्खलन आपदा' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हस्ता/-

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

**भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल,
तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर**